सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2013 वर्ष 12 अंक 10

जन सेवा

जन की सेवा कर तू प्यारे जन सेवा में मुक्ति है
यदि रखता है ज्ञान तू प्यारे यह तो ईश्वर भक्ति है
अल्लाह ही ने रचा है सब को हिन्दू हों या मुस्लिम हों
रहेंगे जीवित सभी यहां पर प्रेम की इन में शक्ति है
प्रेम चिन्ह है मानवता का दानवता का ईर्ष्या
मर्म यह समझा जिसने भी है वही तो ज्ञानी व्यक्ति है
प्रेम बढ़ाओ प्रेम जगाओ प्रेम की यां पर धूम मचाओ
प्रेम हो रब से प्रेम हो जग से सीख यह प्यारे सत्य है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
झगड़ा दादा के दो बेटों में	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
कुछ हज़रत मुआविया रज़ि0 के	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	10
मिसाली अख़लाक़ कुर्आन	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	15
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	18
हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की एक रात	जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी	20
इस्लामी शरीअत मुकम्मल है बिदअ़त	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	26
हिमाक़त (मूर्खता)	इदारा	31
कुर्आन पाक की महानता	तहरीम मुशीर माही	34
मोटापाः सुन्दरता व स्वास्थ्य	हकीम मो0 इदरीस रहीमी	37
अहले ख़ैर हज़रात से अपील		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद :- जो लोग क़सम खा लेते हैं अपनी औरतों के पास जाने से उनके लिए मुहलत है चार महीने की फिर अगर बाहम मिल गये तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[226]। और अगर इरादा कर लिया छोड़ देने को तो बेशक अल्लाह सुन्ने वाला और जानने वाला है[227]। और तलाक़ वाली औरतें इंतिज़ार में रखें अपने आप को तीन हैज (रज) तक और उनको ह़लाल नहीं कि छुपा रखें जो पैदा किया अल्लाह ने उनके पेट में अगर वह ईमान रखती हैं अल्लाह पर और पिछले दिन पर और उनके पति ह़क़्क़ रखते हैं उनके लौटा लेने का उस मुद्दत में अगर चाहें सुलूक से रहना, और औरतों का भी ह़क़्क़ है जैसा कि मर्दों का उन पर हक़्क़ है दस्तूर के मुवाफिक और मर्दों को औरतों पर फज़ीलत है और अल्लाह ज़बरदस्त है तदबीर वाला[228]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. यानी अगर कोई क़सम खाये कि मैं अपनी औरत के पास न जाऊंगा तो अगर चार माह के अंदर औरत के पास गया तो क़सम का कफ़्फारा देगा और औरत उसके निकाह में रहेगी और अगर चार महीने गुज़र गये और उसके पास न गया तो औरत पर तलाक़ बाइन हो जायेगी।

फायदा: ईला—शरअ़ में उसको कहते हैं कि औरत के पास जाने से चार महीने या ज़ायद के लिए या बिला कैद मुद्दत क़सम खाये और चार महीने से कम ईला न होगा, ईला की तीनों सूरतों में चार महीने के अंदर औरत के पास जायेगा तो कफ़्फ़ारा क़सम देना पड़ेगा वरना चार माह के खतम पर बिला तलाक़ दिये और बाइना हो जायेगी और अगर चार महीने से कम पर क़सम खाये मसलन कसम खाई की तीन महीने औरत के पास न जाऊंगा तो यह ईला शरई नहीं, उसका यह हुक्म है कि अगर क़सम को तोड़ा मसलन सूरत—ए—मज़कूर: में तीन महीने केअंदर औरत के पास गया तो क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और अगर क़सम को पूरा किया यानी तीन महीने तक मसलन उसके पास न गया तो न औरत पर तलाक़ पड़ेगी न कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।

2. जब मर्द ने औरत को तलाक़ दी तो अभी उस औरत को किसी दूसरे से निकाह़ रवा (उचित) नही जब तक तीन रज पूरे न हो जायें ताकि हमल (गर्भ) हो तो मालूम हो जाए और किसी की औलाद किसी को न मिल जाए इसलिए औरत पर फर्ज है कि जो उनके पेट में हो

शेष पृष्ठ..... 9 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

फ़ज्र की दो रकअ़तों के बाद लेटना मुस्तहब है

—अमतुल्लाह तस्नीम

फज्र की सुन्नत के बाद इस्तिराहत- हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फज्र की दो रकअ़तें पढ़ कर दायें पहलू पर लेट जाते थे। (बुख़ारी)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इशा की नमाज़ से फारिग़ हो कर सुबह तक ग्यारह रकअ़त पढ़ते थे। दो–दो रकअ़त पर सलाम फेरते थे और एक रकअ़त वित्र पढ़ते थे, फिर मुअज़्ज़िन अज़ान कह कर खामोश हो जाता था उतने में सुबह ज़ाहिर हो जाती थी और मुअज़्ज़िन आपको इत्तिला देने आता था, उस वक़्त आप रकअ़त हलकी सी पढ़ते थे फिर दायें पहलू पर लेट कर आराम फरमाते उस बीच में मुअज़्ज़िन इकामत (तकबीर) के लिए आ जाता था। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब फज्र की दो रकअ़त पढ़ लिया करो तो अपने दायें पहलू लेट जाया करो। (अबू दाऊद–तिर्मिज़ी)

जुहर की सुन्नतें-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो रकअतें जुहर की नमाज़ से पहले और दो रकअतें उसके बाद पढ़ी हैं (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर की चार रकअ़त सुन्नत कभी नहीं छोड़ी (बुख़ारी)

सुन्नते मुअक्कदा-

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में जुहर की चार रकअतें पढ़ कर बाहर तशरीफ ले जाते और लोगों को नमाज़ पढ़ा कर अन्दर तशरीफ लाते फिर दो रकअ़तें पढ़ते, फिर मग़रिब की नमाज़ लोगों को पढ़ा कर अन्दर तशरीफ लाते और दो रकअ़तें पढ़ते, फिर इस तरह इशा की नमाज़ पढ़ा कर घर में तशरीफ लाते और दो रकअतें पढ़ते थे। (मुस्लिम)

हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने जुहर से पहले और जुहर के बाद चार रकअ़तों की निगहदाश्त रखी तो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख हराम कर देगा। (अबू दाऊद–तिर्मिजी)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न साइब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूरज के ज़वाल के बाद जुहर से पहले चार रकअतें

शेष पृष्ठ.....14 पर

झगड़ा दादा के दो बेटों में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

पवित्र कुर्आन के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रथम पुरुष दादा आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ाला ने अपने शक्तियों द्वारा मिट्टी से बनाया फिर उनमें प्राण डाला। तत्यपश्चात उनके एक अंग पस्ली से हव्वा को निकाला फिर दोनों को पति पत्नी बना दिया, दोनों जन्नत में रहते थे, उनको विशेष वस्त्र मिला हुआ था जिसे खोलने की ज़रूरत न पड़ती, जन्नत में उनको मल मूत्र की आवश्यकता न होती अतः एक दूसरे से तो क्या स्वयं अपने गुप्त अंगों से भी परिचित न थे, परन्तु जब अल्लाह ने चाहा कि इस संसार को मानव जाति से बसाए तो ऐसे कारण पैदा किये कि दादा आदम और दादी हव्वा इस पृथ्वी पर उतारे गये, विस्तार को छोड़ते हुए संक्षेप में प्रस्तुत हैं कि फिर दोनों से सन्तान जन्म लेने लगी, हर गर्भ से एक लड़का और एक लड़की पैदा होती, अल्लाह को उनकी सन्तान अब पति पत्नी के मेल से बढ़ाना था। अल्लाह ने उनको नियम दिये कि एक गर्भ के लड़के से दूसरे गर्भ की लड़की का विवाह कर दिया करें। अतः जो लड़के लड़कियां जवान हो जाते इसी नियम के अनुसार उनका विवाह कर दिया जाता।

दादा आदम के दो बेटे हाबील व काबील नाम के थे, जब वह जवान हुए तो नियमानुसार हाबील को एक लड़की दी जाने लगी तो काबील झगड़ने लगा कि इसे तो मैं लूंगा। उस समय के नियमानुसार दोनों से कुर्बानी प्रस्तुत करने को कहा गया, और तै पाया कि जिस की कुर्बानी स्वीकृति प्राप्त करेगी वही इस लड़की का अधिकारी होगा, उस समय कुर्बानी स्वीकृत होने पर एक आग आकर कुर्बानी को लुप्त कर देती, दोनों ने कुर्बानी प्रस्तुत की हाबील की कुर्बानी स्वीकार हो गई काबील की कुर्बानी पड़ी रह गई इस पर काबील की ईर्ष्या भड़क उठी उसने हाबील से कहा मैं तुम को मार डालूंगा, हाबील ने कहा तुम्हारा जो जी चाहे करो, कुर्बानी उसी की स्वीकृत प्राप्त करती है जो अल्लाह से डर कर जीवन बिताता है। मैं तो तुम पर हाथ न उठाऊंगा। तुम मुझे क़त्ल करोगे तो उसका दण्ड तुम स्वयं भोगोगे। अतएव क़ाबील ने हाबील को मार डाला, परन्तु उसके समझ में यह न आ रहा था कि वह अब क्या करे, वह भाई का शव लिए फिरता था अन्ततः अल्लाह ने दो कव्वे भेजे वह परस्पर लड़े एक ने दूसरे को मार डाला फिर अपनी चोंच से ज़मीन में गड्ढा खोद कर उसमें उसको बन्द कर दिया क़ाबील की भी यही समझ में आया उसने गड्ढा खोद कर भाई के शव को ज़मीन में गाड़ दिया। एक नारी के दो चाहने वाले में पृथ्वी पर यह पहला झगड़ा था।

एक नारी के झगड़े में इस धरती पर पहला पुरुष क़त्ल था।

इस धरती पर मानव जाति की पहली मौत थी। इस धरती पर मानव जाति की पहली क़ब्र थी। फिर तो यह सिलसिला चल पड़ा और इस धरती पर झगड़े की तीन जड़ों ने जड़ पकड़ लिया ज़र, जन, ज़मीन (धन, नारी तथा भूमि) उक्त घटना कल्पित नहीं वास्तविक है, यदि आप कल्पित माने तो बताएं कि क्या एक सुन्दर नव युविका को कोई युवक देखेगा और वह उसकी माँ, बहन, बेटी, मौसी, फूफी आदि न हो तो उसके मन में क्या आएगा, एक संयमी पुरुष ही उस को देख कर अपनी निगाहें नीची कर सकता है। वरना वह उसे कम से कम ताकते रहना चाहेगा आगे अपने मन की बात वह जाने, क्या कोई इस प्राकृतिक प्रवृत्ति को बदल देगा? एक नव युविका भी मन रखती है वह भी चाहती है कि कोई नव युवक उसे आनन्द पहुंचाए, इसी प्रवृत्ति के अन्तर्गत एक यूवती पति ढूँढती तथा पति करती है और इस आधुनिक युग में अपना मित्र बनाती है, उसकी इच्छा यही होती है कि वह अपने मित्र से तो आनन्द ले परन्तु दूसरा उसे न छेड़े लेकिन जब यह दृष्य खुले आम दूसरा युवक देखता है तो वह यदि संयमी नही है तो अपने मन से विवश हो कर पागल हो उठता है, और दुष्कर्म को तैयार हो जाता है, यह बातें सतही नहीं है ध्यान देने योग्य हैं, यदि हम चाहते हैं कि समाज से नारी के साथ दुष्कर्म समाप्त हो तो निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक होगा।

1. लोगों में ईशभय (अल्लाह का डर) पैदा करना होगा और लोगों को संयमी बनना होगा। परन्तु यह काम धर्मगुरुओं द्वारा ही सम्भव होगा।

2. किसी स्त्री को ऐसे ही आफिस में नियुक्ति हो जिस में और स्त्रियां भी हों, आफिस में अकेली स्त्री की नियुक्ति न हो।

3. जिस आफिस में पुरुष तथा स्त्रियां दोनों हों उस में प्रतिबन्ध हो कि किसी भी दशा में पुरुष तथा स्त्री एकान्त में न हों।

4. स्त्रियां अपने आफिस बन ठन कर मेकप करके न जाएं अच्छा होगा कि वह महिला पुलिस की भांति खाकी वस्त्र में हों।

5. यह जो अपने मित्र के संग टहलने निकलती हैं उस पर पूरी तरह प्रतिबन्ध हो।

6. समाज की सभी युवतियों के लिए घोषणा हो कि वह बनठन कर घर से बाहर न निकलें तथा रात में अपने घर में रहें। रात में निकलने की ज़रूरत हो तो अपने मित्र नहीं अपितु पति, अथवा भाई के साथ निकलें।

7. मुस्लिम स्त्रियां अपने इस्लामी नियमों के साथ रहें।

यदि इन बातों को अपनाया जाए तो यह तो नहीं कहा जा सकता कि स्त्रियों के साथ दुष्कर्म एक दम समाप्त हो जाएगा परन्तु बड़ी कमी आजाएगी।

बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज समाज में स्वयं स्त्रियों ने अपने

शेष पृष्ठ..... 14 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

ग़ज़वे मूता सन् 8 हिजरी

उमरे की क़ज़ा-

सुलह हुदैबिया में कुरैश से मुआहिदा हुआ था कि अगले साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्के में आकर उमरा अदा करेंगे। अतः दूसरे साल सन् 7 हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान "उमरतुल्क़ज़ा" की नियत से तशरीफ ले चले कुरैश ने कोई मुज़ाहिमत (रुकावट) नहीं की, आपको मक्के जाने दिया और अपने घरों में ताले डाल कर जबल क़ैकआन पर चले गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन रोज़ वहां क़याम फ़रमाया और उमरे से फ़राग़त की[1]।

इसी मौक़े पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैश की बनू अलाल शाख़ की ख़ातून मैमूना बिन्त हारिस से निकाह किया और वलीमा किया।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन उमैर अज़दी को अपने दावती मकतूब (ख़त) के साथ बुसरा के हाकिम शरहबील बिन उमर ग़स्सानी के पास भेजा था जो रूमी सल्तनत के ताबे (अधीन) था, शरहबील ने हुक्म दिया कि उनको बांध दिया जाये, उसके बाद उनको सामने बुला कर शहीद कर दिया, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंची तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिस की क़ियादत में तीन हज़ार मुजाहिदों पर मुशतमिल (सम्मिलित) एक फौज जमादिल ऊला सन् 8 हिजरी को बुसरा की तरफ रवाना किया और आपने हिदायत की कि अगर ज़ैद बिन हारिस राहे हक़ में जिहाद करते हुए शहीद हो जायें तो जअफरे तैयार, और अगर वह भी शहीद हो जायें तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सिपेहसालार (सेनापति) होंगे और यह भी इरशाद फरमाया की पहले उनको इस्लाम की दावत दी जाये अगर वह इस्लाम की दावत क़बूल कर लें तो जंग की ज़रूरत नहीं। यह पहला इस्लामी लश्कर था जो रूमी हुकूमत में दाखिल हुआ।

जब इस्लामी लश्कर मक़ामे "मआन" पर पहुंचा तो मुसलमानों को इत्तिला मिली कि हिरक़्ल "बलका" के क़रीब एक लाख़ रूमी लश्कर के साथ ख़ेमाज़न है, हज़रत ज़ैद ने यह हालात सुन कर कहा इस सूरते हाल की दरबारे रिसालत को इत्तिला दी जाये और हुक्म का इंतज़ार किया जाये लेकिन अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा कि हमारा असल मक़सद फतह नही, बल्कि दौलते शहादत है, जो हर वक़्त हासिल हो सकती है, चुनांचे यह सुन कर मुसलमानों का यह छोटा गिरोह आगे बढ़ा और मक़ामे मूता में मोर्चा संभाल लिया और जंग शुरु हो गई हज़रत ज़ैद बरछियाँ

1. सही बुख़ारी बाब उमरतिल क़ज़ा, सीरत इब्ने हिशाम 2/370, अलकामिल फित्तारीख़ 2/277

खा कर शहीद हुऐ उसके बाद हज़रत जाफर ने अलम (झण्डा) हाथ में लिया लेकिन काफी देर निहायत बेजिगरी और जवांमर्दी से दुश्मन का मुकाबला करने के बाद तलवारों के जख़्मों से चूर हो कर गिर पड़े और शहीद हो गए हज़रत जाफर की शहादत के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने परचम हाथ में लिया, और वह दादे शुजाअत दे कर बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हुए, अब हज़रत ख़ालिद मुसलमानों के मश्विरे से लश्कर के सरदार बने, हज़रत ख़ालिद अपनी जंगी सूझबूझ की बुनियाद पर इस्लामी लश्कर को शिकस्त से बचा कर सलामती के साथ मदीना वापस ले आए[1]।

कुरैश की तरफ से सुलह के समझौते की ख़िलाफवर्ज़ी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मज़लूमों की मदद करने का फैसला–

सुलह हुदैबिया के नतीजे में मुसलमानों और उनके असल हरीफ (वास्तविक विपक्षी) कुरैश और कुरैश का साथ देने वाले दुश्मनाने इस्लाम के दरमियान अमन की फिज़ा क़ायम हो गई थी, इससे एक दूसरे से मिलने जुलने और देखने से रब्त (सम्पर्क) पैदा हो गया था, इस्लाम के मुखालिफों को इस्लाम और मुसलमानों को क़रीब से देखने और अच्छा महसूस करने पर इस्लाम को क़बूल करने का भरपूर मौक़ा मिला, लेकिन कुरैश इस समझौते की शर्तों पर ज़्यादा अमल न कर सके, दो साल ही गुज़रे थे कि कुरैश ने मुआहिदे की खुल कर ख़िलाफवर्ज़ी की और वह इस तरह हुआ कि उनके साथ शरीक़ होने वाला क़बीला बनूबक्र मुसलमानों के साथ शरीक होने वाले क़बीले बनू ख़ुज़ाआ पर बिला वजह हमलावर हुआ और कुरैश ने खुल कर उसका साथ दिया और इस का ख़याल नहीं किया कि मुआहिद–ए–सुलह की यह खुली खिलाफवर्ज़ी है। उनको इसके लिए हथियार दिये और उनके साथ शरीक होकर खुज़ाआ वालों से जंग की जिनसे मुसलमानों का मुआहिदा था और इससे ज़्यादा ग़लत काम यह किया कि जंग की यह कार्यवाई हरम के अन्दर जा कर की जहां जंग करना सबके नज़दीक नाजायज़ काम था, वह मुसलमानों के हलीफ (पक्षधर) थे, उन पर हमले की सूरत में मुसलमानों की तरफ से मदद मिलने का हक़ हासिल था।

चूनांचे उनके नुमाईन्दे (प्रतिनिधि) उमर बिन सालिम मदीना पहुंचे, उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ रखते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ असहाब भी मौजूद थे, उमर बिन सालिम ने अपने क़बीला की मुसीबत का तज़किरा बहुत प्रभावशाली अंदाज में किया और यह कहा कि कुरैश ने आपसे और आपके हलीफ कबीले से जंग न करने का जो मुआहिदा किया था, उसको तोड़ दिया और हरम के अन्दर हम पर हमलावर हो गए और हमें हरम के अन्दर और इबादत

1. सही बुख़ारी बाब ग़ज़वतुल मूता, जादुल मआद 3/381–385, सीरत इब्ने हिशाम 2/373–383, अलबिदाया वन–निहाया 4/241–259, अलकामिल फित्तारीख़ 2/234–238

की हालत में मारा, आपकी दुहाई है। अमर बिन सालिम के पहुंचने के बाद बनू खुज़ाआ के नुमाईन्दे बुदैल बिन वरक़ा अल खुज़ाई भी कई लोगों के साथ पहुंचे उन्होंने और तफसील से वाकिया बयान किया कि किस किस तरह उनके लोग मारे गए और इस ज़ालिमाना हरकत में कुरैश ने भरपूर मदद की और जंग में शिरकत की, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वाकि़ये को हमदर्दी से सुना और मदद के उनके हक़ को महसूस किया, और हलीफ़ होने के तअल्लुक से मदद देने का इशारा किया और वाकिया मालूम होने पर अपना अंदाज़ा भी ज़ाहिर किया कि उनके मदीना आकर मदद चाहने का इल्म कुरैश को होने पर उनके लीडर अबू सुफियान उन लोगों के आने के नतीजे को महसूस करते हुए मुआहि[illegible] को बहाल करने के लिए आ[illegible]ा चाहेंगे और कुरैश उनको वाकिये का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) रोकने की कोशिश में भेजेंगे। ❑❑

कुर्आन की शिक्षा ....

उसको ज़ाहिर कर दें चाहे गर्भ हो या रज आता हो, और इस मुद्दत को "इद्दत" कहते हैं।

फायदाः मालूम करना चाहिए कि यहां मुतल्लक़ात से खास वह औरतें मुराद है कि उन से निकाह के बाद "सोहबत" या "खल्वते शरईआ" की नौबत शौहर को आ चुकी हो और उन औरतों को रज भी आता हो और आज़ाद भी हों किसी की लौंड़ी न हों क्योंकि जिस औरत से सो़हबत या खलवत की नौबत न आये उसके ऊपर तलाक़ के बाद "इद्दत" बिलकुल नहीं और जिस औरत को हैज़ न आये मसलन कम उम्र या बहुत बूढ़ी हो गयी या उसको हमल है तो पहली दोनों सूरतों में उसकी इद्दत तीन महीने है और हामलः की इद्दत वज़्ए ह़म्ल (प्रसव) है और जो औरत आज़ाद न हो बल्कि किसी की शरई क़ायदे के मुवाफिक़ लौंड़ी हो अगर उसको हैज़ आता हो तो उसकी इद्दत दो हैज़, और हैज़ न आये तो अगर वह छोटी या बुढ़िया है तो उसकी इद्दत 45 दिन है और हामलः है तो वही वज़्ए हम्ल है दूसरी आयतों और हदीसों से यह तफ़सील साबित है।

3. यानी इद्दत के अंदर मर्द चाहे तो औरत को फिर रख ले अगर ये औरत की खुशी न हो मगर इस लौटने से मक़सूद सुलूक और इस्लाह़ हो, औरत को सताना या उस दबाव में उससे महर मॉफ कराना मंजूर न हो यह ज़ुल्म है अगर ऐसा करेगा गुनहगार होगा गो रजअ़त भी सही हो जायेगी।

4. यानी यह कार्य तो हक़ है कि जैसे मर्दों के हुकूक़ औरतों पर हैं जिन का क़ायदे के मुवाफिक अदा करना हर एक पर ज़रूरी है तो अब मर्द को औरत के साथ बदसुलूकी और उसकी हर कि़स्म की हक़तलफी मम्नुअ़ होगी मगर यह भी है कि मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत और फ़ौकि़यत है तो इसलिए रजअ़त में अख़्तियार मर्द को ही दिया गया।

❖❖❖

कुछ हज़रत मुआविया रज़ि० के बारे में

हिन्दी लिपिः मन्ज़र सुब्हानी

—मौलाना अली मियाँ नदवी रह०

तारीख़ी हक़ाइक़ और खास तौर पर उस पेचीदा और मुब्हम दौर को सामने रखते हुए जो हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत के बाद पेश आया और इस्लामी मुआशरे पर अनदुरूनी व बेरूनी बदलते हुए हालात का जो रद्देअमल हुआ उन सब का जाएज़ा लेने से जो बात नज़र आती है वह यह कि हज़रत मुआविया रज़ि० को लोगों की नफ्सियात पहचानने का मलका और अरस–ए–दराज़ तक हुकूमत करने का जो तजरिबा था उसने उनको यक़ीन दिलाया कि उस वक़्त के इस्लामी मुआशरे की क़ियादत और वसीअ़ इस्लामी मम्लिकत की सरबराही (जिसके अनासिर में तनव्वुअ़ पैदा हो चुका था और जिसको चन्द दरचन्द मसाइल व मुश्किलात का सामना करना पड़ता था) खिलाफते राशदा के उन खुतूत पर क़ायम नहीं रखी जा सकती, जिन पर खुलफ़ाये सलासह रज़ि० चलते रहे, और जिन को पूरी ताक़त से निबाहते रहे हज़रत मुआविया रज़ि० इस बात पर मुतमईन हो गये कि वक़्त का तक़ाज़ा यही है कि इस्लामी मम्लिकत को खतरात से महफूज़ रखा जाये, अम्न व अमान क़ायम रहे, गज़वात व फुतूहात का सिलसिला जहां तक जारी रह सकता है उसको जारी रखा जाये और उसकी ख़ातिर अगर एक शख़्सी मौरूसी मगर आदिल हुकूमत क़ायम हो जाये तो कोई हरज़ नहीं है, हुकूमत इस्लामी तअ़लीमात के ताबे हो मगर इसमें लचक हो और शरीअ़त का पास व एहतराम भी इमकानी हद तक क़ायम रहे, हुकूमत के और हुकूमत चलाने के तरीक़े और लोगों से मुआमलात करने के उसूल में तवस्सोअ़ से काम लिया जाये, अगर ज़रूरत व हालात इसके मुतक़ाज़ी हैं तो इसमें कोई नुक़सान नहीं है, मम्लिकत तो दाएर–ए–इस्लाम से बाहर नहीं जाएगी जिस की नौइयत अब एक बड़ी सलतनत की हो चुकी है और वह मुख़तलिफ नस्लों, तहज़ीबों और मज़ाहिब के मानने वाले अनासिर पर मुशतमिल है, होशियारी और लचक के साथ मुआमलात सुलझाये जायें और जो मुश्किलात सामने आयें उनको हल करने में हिकमते अमली और मस्लहते वक़्त से मदद ली जाए वक़्त और मक़ाम के इख़्तिलाफ को पेशे नज़र रखा जाए, लिहाज़ा उन्होंने अपनी हुकूमत एक मुसलमान फौजी व इन्तज़ामी सरबराह की हैसियत से क़ाईम कर ली अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी पेशीनगोई भी फ़रमा दी थी।

ख़िलाफ़त अला मिनहा जिन्नुबूवः तीस साल रहेगी इसके बाद अल्लाह जिसको चाहेगा दे देगा। एक रिवायत

में है अपना मुल्क जिसको चाहेगा दे देगा। हज़रत मुआविया रज़ि0 को खुद भी इस का दावा न था कि उनकी हुकूमत खुलफाए सलासह (हज़रत अबू बक्र व उमर व उस्मान रज़ि0) की ख़िलाफ़त की तरह "खिलाफते राशदा है" वह सफाई के साथ फरमाते थे कि वह एक हाकिम और वालिए सलतनत हैं, अलबत्ता उनके बाद जो हुक्काम और वालिए सलतनत आयेंगे उनके तरज़े अमल को देख कर उनकी क़दर आयेगी और खुला फ़र्क़ महसूस होगा।

मशहूर मुअर्रिख़ मसऊदी ने उनके रोज़ाना के मामूल का तज़किरा करते हुए लिखा है, इनके यहां दिन रात में पाँच मरतबा इज़ने आम था, वह सुबह नमाज़े फज्र से फ़ारिग़ होते थे तो बैठ जाते और पिछले हवादिस व वाक़ियात की दास्तान सुनते, फिर दौलत ख़ाना तशरीफ़ ले जाते और कुर्आन मजीद के एक पारह की तिलावत करते फिर मकान पर जा कर इन्तेज़ामी हिदायात देते, फिर चार रकअत पढ़ते और ख़ासुल खास को आने की इजाज़त होती और उनसे तबादल–ए–ख़ियाल करते फिर मुशीराने सल्तनत हाज़िर होते और उस दिन के करने वाले कामों की इत्तला देते, फिर कुछ नाशता फ़रमाते, फिर एक बार घर जा कर बाहर तशरीफ़ ले आते, मस्जिद में कुर्सी लगा दी जाती और आपके पास कमज़ोर बादीया का रहने वाला एअ़राबी बच्चा, औरत और बेकस व लावारिस आदमी आता आप फ़रमाते इसका लेहाज़ व एहतराम करो, कोई कहता मेरे साथ ज़्यादती हुई, आप फ़रमाते इसके मुआमले की तहक़ीक़ करो, जब कोई बाक़ी न रहता तो मज्लिस से उठते चारपाई पर बैठ जाते और फ़रमाते, लोगों को उनकी हैसियत के मुताबिक़ आने दो।

जब सब बैठ जाते तो फ़रमाते कि साहबो, उन लोगों की ज़रूरियात व मसाइल को हम तक पहुंचाया करो जो खुद नहीं पहुंच सकते इसीलिए अल्लाह ने तुम को ऐज़ाज़ बख़शा है, फिर हर एक के मुआमला और ज़रूरत के मुताबिक़ हिदायात देते रोज़ाना का यही मामूल था।

इस सबके साथ अहले सुन्नत वल जमाअत का अकीदा है कि खिलाफ़त के मुआमले में हक़ हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु के साथ था।

शैख़ुल इस्लाम हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रह0 ने भी सराहत के साथ लिखा है कि अली बिन अबी तालिब रज़ि0 और जो लोग उनके साथ थे वह मुक़ाबिल जमाअत के मुकाबले में बरसरे हक़ और अफ़ज़ल थे। इसमें शक नहीं कि हज़रत मुआविया रज़ि0 के अहद में इस्लाम और मुसलमानों को फ़तह व ग़लबा हासिल हुआ, इस्लाम को फ़तह मनदियां हासिल हुई और इसका दायरा बढ़ा, हज़रत मुआविया ने ग़ज़वात का सिलसिला ज़ारी रखा और फुतूहात का सिलसिला बर्री व बहरी रास्तों से वहां तक पहुंचा जहां मुसलमान फ़ातेहीन के क़दम पहले नहीं पड़े थे, उनकी फुतूहात बहरे औकियानूस (अटलान्टिक) तक पहुंच गयी। मिस्र के गवर्नर ने सूडान को इस्लामी

मम्लिकत में शामिल कर लिया उनके ज़माने में बहरी बेड़े कसरत से तैयार हुए उनको इस बात का खास एहतिमाम था, यहां तक की उन बेड़ों की तादाद 1700 तक पहुंच गई, यह सब कश्तियां, हथियार और सिपाहियों से भर पूर थीं, इन बहरी बेड़ों को वह मुख़्तलिफ़ सिमतों में रवाना करते और वह कामयाब हो कर वापस आते, उनके ज़रिए मुतअ़दद एलाक़े फ़तह हुए जिन में जज़ीर–ए–क़बरस और यूनान के बाज़ जज़ीरे और जज़ीर–ए–रोदस भी शामिल हैं। ख़ुशकी के एलाकों को फ़तह करने के लिए उन्होंने एक फ़ौज तैयार की थी जो जाड़ों में जा कर हमलावर होती (उसको शवाती कहते) दूसरा दस्ता था जो गर्मियों में हमला करता उसका नाम अस्सवाइफ़ था, यह ग़ज़वात मुसलसल जारी थे और मुसलमानों की सरहदें दुश्मनों से महफ़ूज़ थीं सन् 48 हिजरी में हज़रत मुआविया रज़ि0 ने एक बड़ी फौज तैयार की थी कि वह कुस्तुनतुनिया पर बहरी और बरी दोनों तरफ से हमले करे, मगर चूंकि उसकी शहर पनाह बहुत मज़बूत थी और वहां तक पहुंचना दुशवार था और चूंकि यूनानी आतिशी हमले ने उनके बेड़ों को तबाह कर दिया था, इसलिए वह हमला कामयाब न हो सका और कुस्तुनतुनिया फ़तह नहीं हुआ, इस फ़ौज में शरीक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी की वफ़ात इसी शहर पनाह के हेसार के ज़माने में हुई उनकी तदफ़ीन शहर पनाह के क़रीब अमल में आई, हज़रत मुआविया रज़ि0 ही की हुकूमत के ज़माने में मुसलमान क़ाईद उक़बह बिन नाफेअ़ अफ्रीक़ा में दाखिल हुए और क़बाइल बरबर में जो लोग इस्लाम लाये वह उनकी फ़ौज से आकर मिल गये और क़ैरवान में अपना एक मरकज़ और फ़ौजी छावनी बना ली और मुसलमानों की हुकूमत का रक़बा बढ़ गया।

हज़रत मुआविया रज़ि0 में बहुत सी ऐसी खूबियां थीं जिससे उनकी इस्लाम और मुसलमानों से मुहब्बत का पता चलता है और यह कि वह दीनी ढ़ाँचा को बाक़ी रखना चाहते थे और इसका दिफ़ाअ़ करते थे, उनकी दूर बीनी और इन्तेज़ामी उमूर में हिकमत के अलावा उनके अन्दर दीन की हमीयत और इस्लाम और मुसलमानों की मसलहतों को अगर ज़रूरत पड़े तो तरजीह देने का भी जज़बा था उनका एक कारनामा इस मौक़े पर क़ाबिले ज़िक्र है जिससे उनकी बुलन्दिये किरदार और दीन की हमीयत का पता चलता है जिसको बहुत से मुवर्रिख़ीन ने ज़िक्र किया है जिनमें इब्ने कसीर भी हैं, इब्ने कसीर ने लिखा है, शहनशाहे रूम ने हज़रत मुआविया को मिलाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की चूंकि उनका इक़्तेदार रूमी सल्तनत के लिए खतरा बन चुका था और शामी फ़ौजें उसकी अफ़वाज को मग़लूब करके ज़लील कर चुकी थीं इसलिए उसने जब यह देखा कि मुआविया रज़ि0 अली रज़ि0

से जंग में मशगूल हैं वह बड़ी फ़ौज के साथ किसी क़रीब के मुल्क में आया और मुआविया रज़ि0 को लालच दी तो हज़रत मुआविया रज़ि0 ने उसको लिखा "बख़ुदा अगर तुम न रुके और ऐ लईन अगर तू अपने मुल्क वापस न गया तो हम और हमारे चचा ज़ाद भाई अली दोनों आपस में मिल जायेंगे और तुझको तेरे क़लमरू से ख़ारिज कर देंगे और रूये ज़मीन को (उसकी उसअत के बावजूद) तुझ पर तंग कर देंगे", यह सुन कर शाह रूम डर गया और जंग बन्दी की अपील की। यह अम्र फ़रामोश नहीं करना चाहिए कि हज़रत मुआविया रज़ि0 इब्न अबी सुफियान रज़ि0 सहाब–ए–किराम रज़ि0 की जमाअत के एक मुम्ताज फर्द हैं इनके मनाक़िब में हदीसें वारिद हुई हैं, जो लोग उनपर ज़बाने तआन दराज़ करते हैं और उनके सिलसिले में बेबाकी व ज़ुबान दराज़ी से काम लेते हैं उनको इस अम्र का पास व लेहाज़ होना चाहिए कि वह एक ऐसे सहाबी हैं जिनको क़राबत का शरफ भी हासिल है।

इमाम अबू दाऊद ने हज़रत अबू सईद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया "मेरे सहाबा की बुराई न करो क़सम उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है अगर तुममें से कोई उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना अल्लाह की राह में देदे तो उनकी बराबरी क्या उनके निस्फ़ दर्जे को भी नहीं पा सकता"।

अबू दाऊद ने अबू बक्र रज़ि0 से रिवायत की है कि उन्होंने कहा "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन रज़ि0 के बारे में फरमाया कि यह मेरा फ़रजन्द सरदार है मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिए मेरी उम्मत के दो गिरोहों में सुलह करायेगा"।

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ यह हैं उम्मीद है कि अल्लाह इनके ज़रिए दो बड़े गिरोहों में सुलह करा देगा।

दैलमी ने हज़रत हसन बिन अली रज़ि0 से रिवायत की है कि इन्होंने फ़रमाया मैंने हज़रत अली रज़ि0 को यह कहते सुना कि वह फ़रमाते थे कि मैंने सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि दिन रात के तसलसुल का क़िस्सा ख़त्म न होगा कि मुआविया रज़ि0 बरसरे हुकूमत आ जायेंगे।

आजूरी किताबुस्शरीअह में अब्दुल मलिक बिन उमैर से रिवायत करते हैं कि हज़रत मुआविया रज़ि0 ने फरमाया "जब से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह कहते हुए सुना कि ऐ मुआविया अगर तुम को हुकूमत मिल जाये तो अच्छी तरह हुकूमत करना उस वक़्त से मुझे ख़िलाफत के हुसूल की तमन्ना थी"।

उम्मे हराम की हदीस से यह साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "पहली फ़ौज जो समन्दी इलाका पर हमला आवर होगी उसमें हिस्सा लेने वालों की नजात और बख़्शिश है"।

और पहला शख़्स जो हज़रत उस्मान रज़ि0 के

अहद में बहरी रास्ते से जेहाद को निकला वह हज़रत मुआविया थे, उम्मे हराम उस फ़ौज में थीं और समन्दर पार करने के बाद उनकी वफ़ात हुई है।

यह बात साबित है कि हज़रत मुआविया को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना कातिब बनाया था और आप अपना कातिब उसी को बनाते थे जो अदल व अमानत के सिफ़ात से मुत्तसिफ़ हो।

हज़रत मुआविया अपने बारे में कहते हैं "मैं ख़लीफा नहीं हूं लेकिन इस्लाम में पहला बादशाह हूँ और मेरे बाद तुमको दूसरे बादशाहों का तजरिबा हो जाएगा"।

हज़रत मुआविया रज़ि0 के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चन्द मूये मुबारक थे, उन्होंने वसीयत की थी कि इन बालों को उनके मरने के बाद उनकी नाक के अन्दर रख दिया जाये"।

वह ख़िलाफत के बाज़ ऐसे उसूल व मक़ासिद से वाक़िफ़ थे जिनको वह अमल में न ला सके इसलिए कि जमाना बदल चुका था और हालात व माहौल के तक़ाज़े, मम्लिकत की उसअ़त, ज़िम्मेदारियों की कसरत, वक़्ती मसाइल की मुश्किलात और सरबराहे हुकूमत की नाज़ुक जिम्मेदारियाँ (उनके नजदीक) उसकी मुतहम्मिल न थीं, जो लोग इन गहरी और वसीअ़ तब्दीलियों और ज़माने के अजीम फ़र्क़ से वाक़िफ़ हैं, वह उनको किसी हद तक माजूर करार देंगे, और फैसला करते वक़्त हालात और माहौल की तब्दीली को नज़र में रखेंगे।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि यह वह समय है जिस में आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं तो मैं चाहता हूँ कि उस समय में मेरे नेक अमल आसमान में पहुंच जायें (तिर्मिज़ी) हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर किसी वजह से जुहर की चार रकअ़तें न पढ़ सकते थे तो फिर उसको बाद में पढ़ते थे। (तिर्मिज़ी) ❑❑

झगड़ा दादा के दो .....

हाथों जो बिगाड़ पैदा किया है वह किसी से ढका छुपा नहीं है। मैं एक सब्ज़ी की दुकान से सब्ज़ी ले रहा था, सब्ज़ी बेचने वाली स्त्री थी सादे कपड़ों में बैठी सब्ज़ी बेच रही थी, उसी समय दो तीन युवतियां ऐसे वस्त्र में निकलीं कि जैसे उसके शरीर के अंगों के दबाव से अभी वस्त्र फट जाएगा, होंटों पर लगी लाली, बाल डिकिरेट कराये हुए एक दूसरे को छेड़ती हुई, उस औरत ने तुरन्त कहा इसके बाद भी यह कहेंगी कि लड़के हम को छेड़ते हैं मैं तो कहूंगी कि यह स्वयं लड़कों के मनों को छेड़ती हैं, इन लड़कियों ने समाज को बिगाड़ कर रखा है।

क्या उस औरत के सत्य वचनों पर कोई ध्यान देने वाला है। ❑❑

अनुरोध

पाठकों से अनुरोध है कि वह 'सच्चा राही' के बारे में हमको अपनी राय अवश्य भेजें।

मिसाली अख़लाक़ क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में

हिन्दी लिपिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

खुदाये वाहिद ही इन्सान और सारी दुनिया का खालिक व मालिक है, इसलिए वह बखूबी उनकी खूबियों और कमज़ोरियों से वाकिफ है इसी वास्ते उसने पैगम्बरों को भेजा कि खूबियों और कमज़ोरियों को वाज़ेह करके बन्दगाने खुदा को राहे हक़्क़ दिखायें, सबके आखीर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए निहायत तफसील से अहकामात भेजे ताकि बहाना बनाने का मौका न मिले और कोई यह न कह सके कि यह बात हम को मालूम न हो सकी, उसी सिलसिले की अहम तरीन कड़ी अखलाकियात से मुतअल्लिक़ है, कौमों का उरूज़ व ज़वाल (उन्नति व पतन) भी उसी से वाबस्ता है, किसी कौम का अख़्लाक़ी पतन पहले शुरु होता है सियासी ज़वाल बाद में आता है। जुज़्वी (आंशिक) तौर पर अख़्लाकियात से मुतअल्लिक अहकामात तो हर जगह मिल जायेंगे, लेकिन जिस तफ्सील और बारीक बीनी से इस्लामने उनकी तशरीह की है वह कहीं और तलाश करना बेफायदा है उसका एक बहुत मुख़्तसर खाका आपके सामने पेश किया जाता है। पहले अख़्लाकियात के अच्छे पहलू के कुछ नमूने आप देखेंगे उसके बाद बुरे पहलू के मुतअल्लिक़ इस्लामी तालीमात नज़र से गुजरेंगी, इसलिएँ कि हमेशा से यही दस्तूर है कि कुछ चीजों का हुक्म दिया जाता है और कुछ चीज़ों से रुके रहने की तालीम दी जाती है। बुलन्द अख़्लाक़ के मुतअल्लिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उमूमी तालीम यह थी आप सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम ने फरमाया ''बेशक अल्लाह तआला बुलन्द हौसल्गी के बड़े काम पसन्द करता है और छोटी और घटिया बातें नापसन्द करता है'' हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''कमज़ोर मुसलमान से ताकतवर मुसलमान ज़्यादा बेहतर है और खुदा के नज़दीक प्यारा है और हर एक में भलाई है हर वह चीज़ जो तुझे नफा दे उसकी पूरी ख़्वाहिश करो, और खुदा से मदद चाहो उस राह में कमज़ोरी न दिखाओ, और अगर उस रास्ते में तुझे तक्लीफ पहुंच जाये तो यह न कह कि अगर मैं यूं करता तो यूं होता, बल्कि यूं कह कि अल्लाह ने मुकद्दर कर दिया था और जो चाहा उसने किया क्योंकि यह अगर और मगर शैतान का कारोबार खोलता है'' (मुस्लिम)।

दर असल इन्सान के हौसलामंदी, पुरउम्मीदी, इस्तिक़लाल (स्थिरता) और साहस में इन बातों का बड़ा दखल है, अगर इरादा व भरोसा करके किसी काम को शुरु करे और कामयाब हो कर प्रसन्न हो तो फखो गुरूर

में मुब्तला न होना चाहिए, बल्कि शुक्र के जज़्बात उभरने चाहिए कि सिर्फ अल्लाह के फज़्लो करम से हुआ, और अगर नाकामी उठानी पड़े, तो यासो न उम्मीदी के दलदल में नहीं गिरना चाहिए और समझना चाहिए कि अल्लाह तआला की यही मंशा थी इसी को कुर्आन मजीद इस तरह बयान करता है "कि कोई मुसीबत नहीं आती जमीन पर और न तुम पर लेकिन यह कि वह उसके पैदा करने से पहले किताबे इलाही में दर्ज होती है, यह अल्लाह पर आसान है, यह इसलिए ताकि उस पर जो तुम से जाता रहे ग़म न करो और जो तुम को अल्लाह दे उस पर न इतराओ, अल्लाह किसी इतराने वाले बड़ाई हांकने वाले को पसंद नहीं करता"। (अलहदीदः 22–23)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मोमिन का मुआमला भी अजीब है उसका सारा मुआमला खैर ही खैर है, यह चीज सिर्फ मोमिन ही को हासिल है कि अगर फ़राख़ी व खुशहाली आती है तो शुक्र करता है तो यह उसके हक में बेहतर होता है, और अगर फक्र व तंगदस्ती में मुब्तला होता है तो सब्र करता है तो यह उसके हक़ में बेहतर होता है"। (मुस्लिम)

दुश्मनों के साथ बरताव–

अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुश्मानों के साथ अच्छा व्यवहार करने की स्पष्ट तालीम दी है, उनको मुआफ करने, हुस्ने सुलूक करने, उनके लिये दुआयें करने और अगर वह जुल्म करें तो भी उनके साथ इन्साफ करने की तालीम दी है अल्लाह का इरशाद है "ऐ ईमान वालो, खुदा के लिए खड़े हो जाया करो इन्साफ के साथ गवाह बन कर और किसी कौम की दुश्मनी तुम को न्याय करने से न रोके, इन्साफ करो कि इन्साफ करना परहेज़गारी से बहुत करीब है, और खुदा से डरो, उसको तुम्हारे कामों की खबर है"।

(अलमाईदाः 8)

दूसरी जगह इरशाद है "भलाई और बुराई बराबरनहीं, बुराई को भलाई से दूर करो, दफ़अतन वह जिसके और तुम्हारे मध्य दुश्मनी है रिश्तेदार दोस्त के मिस्ल हो जायेगा, और इस पर अमल की तौफीक़ उन्हीं को होती है जो सब्र करते हैं और उन्हीं को यह सआ़दत हासिल होती है जो बड़ी किस्मत वाले हैं और अगर शैतान तुमको उकसाये तो खुदा की पनाह मांगो कि वह सुन्ने वाला और जानने वाला है।

(सूर–ए–फुस्सिलतः 34–36)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक शक्तिशाली आलिम सहाबी हज़रत अब्दुल्लह इब्ने अब्बास रज़ि0 इसकी तफ्सीर बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को गुस्से व क्रोध की हालत में सब्र का और किसी के बुराई करने पर बुर्दबारी और मॉफ करने का हुक्म दिया है, वह ऐसा करेंगे तो खुदा उनको शैतान के पंजे से छुड़ायेगा और उनका दुश्मन भी दोस्त

की तरह उनके आगे सर झुका देगा (बुख़ारी)।

एक दफा एक व्यक्ति ने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे गाली दी वह सुन कर चुप रहे, उसने दोबारा वही हरकत की वह फिर भी चुप रहे, उसने फिर तीसरी बार बद जुबानी की तो वह चुप न रहसके और कुछ बोल उठे, यह देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फौरन उठ गये, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने पूछा या रसूलुल्लाह! क्या आप मुझ से नाराज हो गये, फरमाया "ऐ अबू बक्र रज़ि0! जब तक तुम चुप थे तो खुदा का फरिश्ता तुम्हारी तरफ से खड़ा था जब तुमने जवाब दिया तो वह हट गया।

(अबूदाऊद)

खुद अल्लाह के आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दुश्मनों को मुआफ किया, और उस समय माफ किया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे बदला लेने की ताक़त रखते थे और ऐसे दुश्मनों को मुआफ किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खून के प्यासे थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तकलीफ पहुंचाने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा के क़ातिल "वहशी" को और कलेजा चबाने वाली यहूदी औरत दोनों को मुआफ किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैबर में ज़हर देने वाली यहूदी औरत को मुआफ किया और मक्के के उन हजारों दुश्मनों को मुआफ किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खून के प्यासे रह चुके थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन ताइफ वालों के हक में दुआये खैर की जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते बाबरकत पर पत्थरों की बारिश की थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैर मुबारक लहूलहान किये थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब कहा गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुश्मनों के लिए बद दुआ करें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फरमाया "मैं संसार में लानत के लिए नहीं बल्कि रहमत के लिए आया हूँ"।

(सीरतुन्नबी सल्ल0–6)

इस्लाम ने नफरत के जज़्बात को सिरे से खत्म नहीं किये, क्योंकि ऐसा करना क़ानूने फितरत से चश्मपोशी है, नाराज़गी नफरत, और मुखालफत भी इन्सान की फितरत (प्रकृति) में दाखिल है उनको कुचला नहीं जा सकता, इसीलिए इस्लाम ने इन जज़्बात के इस्तेमाल का सही मौका व महल मुतअय्यन कर दिया है वह यह कि उनकी नीव अल्लाह की रज़ा और नाराजगी हो, जाती मकासिद, व्यक्तिगत मस्लहत और अंदरूनी अमराज़ न हों बल्कि सिर्फ अल्लाह ही के लिए नफरत और बुग्ज़ हो और उसी के लिए महब्बत व उलफत हो।

एक दफा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाब–ए

शेष पृष्ठ..... 30 पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

निकाह में पूर्वजों का तरीक़ा (परम्परा)—

इस्लाम में निकाह का फरीज़ा और विवाहोत्सव अति सरल एवं संक्षिप्त था इसको जीवन का एक परम कर्त्तव्य, एक स्वाभाविक आवश्यकता और एक इबादत (पुण्य कार्य) के रूप में अदा किया जाता था। केवल ईजाब व कुबूल[1] (स्वीकृति) के दो शब्द और दो गवाह इसके लिए अनिवार्य हैं। इसका उद्देश्य इस बात की वैधानिक रूप से पुष्टि करना है कि यह सम्बन्ध अवैधानिक, दूषित, रहस्यमयी एवं चोरी छिपे नहीं स्थापित हुआ है, अतः इस प्रक्रिया को किसी सीमा तक एलान तथा शुहरत के साथ सम्पन्न किया जाना चाहिए और इसके लिए गवाहों का होना अनिवार्य है। पुरुष "महर[2]" का अदा करना ज़रूरी समझे, और स्त्री की सुरक्षा, मान मर्यादा और उसके खान पान का उत्तरदायित्व स्वीकार करे, इसके अतिरिक्त कोई भी बात ज़रूरी न थी। इस्लाम के इतिहास में इसके भी उदाहरण मिलते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपस्थिति में जब कि मदीना मुनव्वरा में मुसलमानों की संख्या अति न्यून और मदीना मुनव्वरा की जनसंख्या बहुत सीमित थी, फिर भी कुछ ऐसे सहाबियों ने, जो मक्का मुकर्रमा से हिज़रत[3] करके आये थे, और जिनके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक ही जन्म भूमि के वासी होने के नाते तथा पारिवारिक घनिष्ठ सम्बन्ध थे, मदीना मुनव्वरा में शादी की और स्वयं पैग़म्बर—ए—इस्लाम को (जिन का सम्मिलित होना बरकत तथा सम्मान का कारण भी था) विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित करने की आवश्कता नहीं समझी, और आपको इस शुभ घटना की जानकारी, अनौपचारिक रूप से, बाद में हुई[4]।

वर्तमान युग में शादी को एक जटिल तथा कष्टदायी रस्म बना लिया गया है—

परन्तु इस समय अनेक इस्लामी क्षेत्रों में सामान्य रूप से और हिन्दुस्तान में विशेष कर, शादी ने विस्तृत तथा जटिल रस्म का रूप धारण कर लिया है, तथा पानी के समान धन बहा कर, वैभव एवं

---

1. इसका क्या तरीक़ा है और इसको किन शब्दों में अदा किया जाता है, आगे की पंक्तियों से ज्ञात होगा।
2. विवाह संस्कार में पूर्व निर्धारित राशि जिसे पुरुष द्वारा स्त्री को विवाह के बाद देना अनिवार्य है और जो विवाह का एक महत्वपूर्ण अंग है (अनु0)।
3. मक्का मुकर्रमा में काफ़िरों द्वारा अति पीड़ित किये जाने पर पैग़म्बर साहब को खुदा की ओर से मदीना मुनव्वरा प्रस्थान करने का आदेश मिला, इसी प्रकार मक्का मुकर्रमा के अन्य मुसलमानों ने प्रस्थान किया, इसी को हिज़रत कहते हैं (अनुवाद)।
4. एक महान सहाबी हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ ने मदीना मुनव्वरा आकर शादी की, अगले दिन जब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उनके कपड़ों में सुगन्ध का अनुभव किया, तो पूछने पर ज्ञात हुआ कि कल उनका निकाह था। इस पर आपने निर्देश दिया कि वलीमा अवश्य करना, चाहे एक बकरी का (हदीस सही)।

प्रतिष्ठा, खानदान की आर्थिक व सांसारिक ख्याति के प्रदर्शन का साधन मात्र बन गई है। इसकी सरलता एवं सुविधा का लगभग अन्त हो गया है और कभी कभी तो वह ऐसी परिस्थितियों को घेर देती है कि लोगों को घोर संकटों विपत्तियों एवं आपदाओं का सामना करना पड़ता है, और यह रस्म ऋण का साधन एवं सिर दर्द बन गई है। जहाँ तक हमारा अध्ययन तथा अनुभव है, आधुनिक शिक्षा तथा आर्थिक क्रान्ति ने कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं डाला, और इसके शोधन में कोई सुधारात्मक एवं सराहनीय सेवा नहीं की है। अच्छे धार्मिक एवं शिक्षित खानदानों में अब भी शादियां बड़े धूम–धाम और आन–बान के साथ की जाती हैं, बारातें बड़ी धूम के साथ जाती हैं, निकाह की महफ़िल में वैभव एवं प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने हेतु उसे साज सज्जा से अलंकृत किया जाता है। इस विषय में वैभव, प्रतिष्ठा तथा अपने विस्तृत सम्बन्धों के प्रदर्शन हेतु अनेक नवीनतक पद्धतियाँ प्रचलित हुई हैं जिनका पहले नाम व निशान भी न था। वलीमा का प्रबन्ध भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसमें भी अवस्थानुकूल दिल खोल कर खर्च किया जाता है और बहुत जगह तो इसमें व्यय की जाने वाली धन राशि हज़ारों से बढ़ कर लाखों तक पहुँच गई है। जिन लोगों के पास नकद नहीं होता, वह इसके लिए ऋण और प्रायः सूद ब्याज पर कर्ज़ लेते हैं। आख्य एवं अभिव्यक्त, अहंकार एवं अभिमान और होड़ तथा प्रतिस्पर्द्धा की भावनायें भी खूब काम करती हैं। इसमें भारतीय मुसलमान दुनिया के मुसलमानों से दो हाथ आगे ही हैं।

नाच–गाना तथा राग–रागनी जो इस्लाम के सरासर खिलाफ़ (विरुद्ध) है–

उन घरानों को छोड़ कर जो वास्तविक रूप से धार्मिक हैं या जो धर्म सुधारक संगठनों से प्रभावित हो चुके हैं, अन्य मुसलमान घरानों में नाच–गाना तथा राग–रागनी विवाहोत्सवों का एक अंग और हर्ष प्रदर्शन का एक लक्षण हैं। बहुत से खानदानों में शादी से कई दिन पहले से राग और गीतों का एक सिलसिला आरम्भ हो जाता है। इसके लिए नाइनें, डोमनियां कई दिन पहले से आकर पड़ाव डाल देती हैं और खानदान की लड़कियाँ भी इसमें भाग लेती हैं। कई दिन पहले से लड़की मांझे बिठाई जाती है और उसका पर्दा करा दिया जाता है। अब बहुत जगह गाने और रागों का स्थान रेकार्डिंग ने ले लिया है। पुराने ज़माने में विशेष कर रईसों तथा ज़मींदारों के यहां नाच रंग की महफ़िल का भी आयोजन होता था और उसके लिए पेशावर वैश्याओं तथा गाने वालों का प्रयोजन किया जाता था। अब कुछ धर्म सुधार सम्बन्धी प्रयासों तथा शिक्षा के प्रभाव से और कुछ आर्थिक कठिनाइयों के कारण इसमें बहुत कमी आ गई है।

❖❖❖

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की एक रात

जिसे हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी पूरी ज़िन्दगी से बेहतर क़रार दिया

—हिन्दीः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हज़रत इब्ने सीरीन रह0 बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि0 के ज़माने में बाज़ लोग हज़रत उमर रज़ि0 का तज़किरा करते हुए उन्हें हज़रत अबू बक्र रज़ि0 पर फज़ीलत दे रहे थे, हज़रत उमर रज़ि0 को जब इसकी खबर हुई तो उन्होंने फरमायाः अल्लाह की क़सम! अबू बक्र रज़ि0 की एक रात और एक दिन उमर रज़ि0 की तमाम ज़िन्दगी की इबादत से बेहतर है फिर उसकी वज़ाहत करते हुए हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया "जब हुज़ूर सल्ल0 हिज़रत के वक्त रातों रात हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ गार–ए–सौर की तरफ निकले, रास्ते में हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का हाल यह था कि वह कुछ देर हुज़ूर सल्ल0 के सामने और कुछ देर आप सल्ल0 के पीछे चल रहे थे, इस कैफियत को आप सल्ल0 ने देख कर फरमया अबू बक्र! तुम्हें क्या हो गया है कि कुछ देर पीछे और कुछ देर सामने चल रहे हो? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह दर अस्ल बात यह है कि जब मुझे यह अन्देशा होता है कि आप सल्ल0 का कोई पीछा कर रहा है तो मैं आप सल्ल0 के पीछे चलता हूँ, फिर जिस वक़्त यह खौफ होता है कि कोई घात लगा कर बैठा है तो मैं आप सल्ल0 के आगे चलता हूँ, यह सुन कर आप सल्ल0 ने फरमायाः ऐ अबू बक्र! क्या तुम चाहते हो कि अगर कोई खतरा या हादसा हो तो वह तुम्हारे साथ हो, मेरे साथ न हो? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने फरमाया हाँ! या रसूलुल्लाह उस ज़ात की क़सम! जिस ने आपको हक़ दे कर भेजा है, मेरी यही तमन्ना है, अल गरज़ जब यह दोनों हज़रात, ग़ार पर पहुंच गये तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने हुज़ूर सल्ल0 से अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! कुछ देर रुक जाइये, मैं आप सल्ल0 के लिए गार को साफ कर दूं, फिर उन्होंने गार में दाखिल हो कर गार को साफ कर दिया, अचानक उन्हें ख़्याल आया कि गार के एक कोने को साफ नहीं किया गया, फिर से हुज़ूर सल्ल0 से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! कुछ देर ठहर जाइए फिर से जाकर उसको साफ कर दिया, उसके बाद हुज़ूर सल्ल0 से फरमायाः या रसूलुल्लाह! अब तशरीफ लाइए, हुज़ूर सल्ल0 गार में तशरीफ ले गये। यह बयान करने के बाद हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमायाः उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, उनकी वह एक रात उमर की तमाम ज़िन्दगी की इबादत से बेहतर है।

यह था अल्लाह के रसूल सल्ल0 के असहाब रज़ि0 की इबादत और खैर के कामों में एक दूसरे की क़द्र का हाल, वह इसके हरीस होते

थे कि किस तरह हमें मौक़ा हाथ आये कि हम रसूल सल्ल0 पर अपनी जान निछावर कर दें और कामयाब व बामुराद हो जायें, उसके लिए वह किसी खतरे की परवाह नहीं करते थे जिसकी एक झलक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के वाकिए हिजरत में मिलती है। (अल बिदायः व अलनिहायः 18/3)

हज़रत उमर रज़ि0 के फ़ज़ाइल में बाज़ रिवायात के तर्जुमे–

1. हज़रत सअ़द बिन अबी वक्कास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ इब्ने खत्ताब रज़ि0 क़सम है उस की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है शैतान जब तुम को किसी रास्ते में चलते हुए देखता है तो उस रास्ते को छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चलने लगता है (बुख़ारी व मुस्लिम) और तिर्मिज़ी में है कि बतहक़ीक़ शैतान तुम से ऐ उमर रज़ि0 डरता है।

2. हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बतहक़ीक़ अल्लाह ने उमर रज़ि0 की ज़बान और उनके दिल पर हक़ को काइम कर दिया है (तिर्मिज़ी) और अबू दाऊद में हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि0 से मन्कूल है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह ने उमर रज़ि0 की ज़बान पर हक़ रख दिया है वह जो कहते हैं हक़ होता है और हज़रत अली रज़ि0 फरमाते थे कि हम लोग इस बात को बईद न समझते थे कि सकीना हज़रत उमर रज़ि0 की ज़बान पर बोलता है। (दलाइलुन्नबविय्या)

3. हज़रत उकबा बिन आमिर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो यक़ीनन वह उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 होते लेकिन मेरे बाद कोई नबी नही है। (तिर्मिज़ी)

4. हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रोज़ घर से बाहर निकल कर मस्जिद तशरीफ़ ले गये और आपके हम राह अबू बक्र रज़ि0 व उमर रज़ि0 भी थे। एक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दाहनी जानिब और दूसरे बाईं जानिब थे, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन दोनों के हाथ पकड़े हुए थे इसी हाल में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हम तीनों क़यामत के दिन इसी तरह उठेंगे। (तिर्मिज़ी)

5. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर नबी के दो वज़ीर आसमान वालों में से होते हैं और दो ज़मीन वालों में से, मेरे दो वज़ीर आसमान वालों में जिब्रील अ0 व मीकाईल अ0 हैं और दो वज़ीर ज़मीन वालों में से अबू बक्र व उमर रज़िअल्लाहुअ़नहुमा हैं।

(तिर्मिज़ी)

❖❖❖

इस्लामी शरीअ़त मुकम्मल है बिदअ़त की उस में गुंजाइश नहीं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

बिदअ़त दीन के नाकिस होने का एलान और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इलज़ाम है—

हक़ीक़त यह है कि बिदअ़त के बारे में कोई अपनी ज़बान से कहे या न कहे, इस बात का एलान और इज़हार होता है कि दीन में कोई कमी थी जिस को पूरा किया जा रहा है, अगर इसका इकरार है कि यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं हुआ आपने इस नये काम का मशवरा नहीं दिया, खुद नहीं किया, सहाबा को इस (नये काम) का मौका नहीं मिला या इस के करने का ख़्याल ही नहीं पैदा हुआ, और न पैदा कराया गया और पाँच सौ या हज़ार बरस के बाद यह बात (यानी नया काम) पैदा हुई तो अगर यह काम ज़रूरी था, दीन का हिस्सा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस का बयान करना और सहाबा से इसका करना रह गया और अगर वह ख़ैर व बरक़त और सवाब का काम है तो सहाबा रज़ि0 उससे महरूम रहे और अल्लाह तआ़ला को सहाबा से ज़्यादा हम से महब्बत है और हमारा ख़्याल है कि हम को यह बात समझाई और इस के करने की तौफीक़ अता फरमाई।

इमामे मालिक रह0 का क़ौल—

मैं यह बातें अपनी तरफ से नहीं कर रहा हूँ बल्कि मदीने के मशहूर इमाम, इमामे मालिक के कौल का तर्जुमा कर रहा हूँ। वह फरमाते हैं "जिसने इस्लाम में अच्छी समझ कर कोई बिदअ़त ईजाद की तो उसने दावा किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मआ़ज़ल्लाह पैगाम पहुंचाने में कमी की" इसलिए कि अल्लाह तआला फरमाता है "कि आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया" (अलमाइदाः 3) तो जो चीज़ उस वक्त दीन नहीं थी वह आज भी दीन नहीं हो सकती। जो चीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दीन न थी वह कभी दीन नहीं हो सकती।

यहाँ पर इमामे मालिक ने बहुत बड़ी हकीक़त बयान कर दी जो हमेशा याद रखने के कालिब है, लेकिन बहुत कम लोगों को याद रहती है कि दीन सिर्फ वह दीन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में दीन था उस वक्त जो चीज़ दीन में शामिल नहीं थी वह कियामत तक दीन नहीं हो सकती, दीन हमारे बनाने से नहीं बनता उसके लिए नकल व सनद की ज़रूरत है, दीन जो कुछ मुकर्रर होना था मुक़र्रर हो चुका, उस पर आखिरी मुहर पड़ चुकी,

उसकी टिक्साल बन्द हो चुकी इस वक्त का बनाया हुआ दीन जाली और गैर मक़्बूल होगा, दीन बनाना अल्लाह व रसूल के अलावा किसी का हक़ नहीं।

बहुत से लोग इस को नहीं समझते कि शरीअ़त मुकर्रर करने का हक़ खालिस अल्लाह और रसूल को (अल्लाह के हुक्म से) है इसी को अल्लाह तआला ने फरमाया है "क्या उनके शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए बाज़ ऐसी चीजें दीन बनाई हैं जिनकी इजाज़त अल्लाह तआला ने नहीं दी" (42:21)। और याद रखो कि बिदअत वह है जिसका अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया हर किस्म की कमी या ज़्यादती दीन में मुदाखलत है।

याद रखो हर किस्म की कमी और ज़्यादती शरीअ़त में तरमीम, अल्लाह और रसूल को सलाह देना, और दीन में मुदाखलत करना है, इन्तिहाई जुरअत और सख़्त गुस्ताखी है। तुम्हारे किसी काम में अगर कोई ना अहल तरमीम या इस्लाह करे तो कितना गुस्सा आए, अल्लाह तआला फरमाता है "ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल के आगे मत बढ़ो" सूर–ए–हुज्रात)। यानी याद रखो ऐसी चीज़ों को दीन बनाना जिसको अल्लाह और रसूल ने दीन नहीं बनाया अल्लाह और रसूल के आगे बढ़ना है, सिर्फ शरीअते इस्लामी ही मुकम्मल क़ानून है।

हमारा और क़ुर्आन का दावा है, तारीख़ का दावा है कि सिर्फ इस्लामी शरीअत ही इस्लाम का कानून है, निकाह व तलाक़, इसका क़ानूने विरासत और कानूने दीवानी और फौजदारी मुकम्मल और आलमगीर और क़ाबिले अमल क़वानीन हैं दूसरे कवानीन तजरिबा हैं और कियामत तक तजरिबा रहेंगे। वह इन्सानों के बनाए हुए हैं और इन्सानों का इल्म और तजरिबा नाकिस हैं, इसलिए उसमें कियामत तक तरमीम और इस्लाह होती रहेगी और नये नये तजरिबात होंगे और हो रहे हैं इसलिए उसको अल्लाह के कानून पर तरजीह देना बद नसीबी और खुद कुशी है, इस्लामी ममालिक और हुकूमतों ने शरीअत के कानून को बदल कर दूसरे वज़ई (बनाये हुए) क़वानीन को मुस्तआर लेकर कौन सा कारनामा अंजाम दिया।

मुसलमानो! खुदारा इन्साफ़ करो कि वह दीन जो मुकम्मल हो चुका उसकी तक्मील (पूरे होने) का ऐलान हो चुका उसका बारहा तजरिबा हो चुका और उसमें कहीं कोई कमी महसूस न हुई। सहाबा ने इसी दीन के ज़रिए से मुल्क फतह की, आख़िरत की कामयाबी हासिल की, दुनिया की सब से कामयाब सल्तनत काइम की। अल्लाह तआला की सबसे बड़ी वलायत हासिल की, बादशाहत की, मिसाली अदालत काइम की, सल्तनतों का नज्म व नसक़ किया, सारी दुनिया का इन्तिज़ाम किया और कियामत तक के लिए हुकूमत व सियासत नज्म व जब्त, और इन्तिजाम का सबक़ दे दिया और यह सब

इसी दीन की बदौलत हुआ इसलिए कि तुम सब जानते हो कि उन बुज़ुर्गों के पास सिवाए इस दीन के कुछ न था और आखिर तक कुछ न था। अल्लाह तआला के यहां इसी सीधे सादे दीन की बदौलत वह मरतबा हासिल किया कि उनका पैर कियामत तक हर मुसलमान के सर पर रहेगा और वह उसकी इज़्ज़त और सर का ताज है। उनके घोड़े की नाक में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मैदाने जिहाद में जो गर्द जाती थी वह भी बड़े बड़े नेक लोगों से बेहतर है। शैखुल इस्लाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक जो बड़े इमाम बड़े सूफी और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के बड़े नामवर शागिर्द हैं उनसे पूछा गया कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज (जो उमर सानी और तक्वा व जुहद की एक निशानी थे) उनका दर्जा बड़ा है या अमीर मुआविया रज़ि0 का? उन्होंने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मैदाने जिहाद में हज़रत मुआविया रज़ि0 के घोड़े की नाक में जो ख़ाक जाती थी वह हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज से बेहतर है।

सहाबा रज़ि0 की महब्बत ईमान है और आखिरत का सरमाया है, उनका ज़िक्र इबादत है, उनसे मिला हुआ दीन क्या नाक़ाफ़ी है? इन चौदह सौ बरसों में तुमने क्या चार चाँद लगाए, कौन सी बरकात हासिल की? कौन सी तरक़्की की? किस किस को फ़तह हासिल हुई, फिर तुम्हें इस कामिल दीन पर कनाअ़त क्यों नहीं होती है? और इस आजमूदा की आजमाइश कब तक होती रहेगी और कब सबक़ हासिल करोगे? अल्लाह ने फ़रमाया "और मैंने तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दीं" हक़ीक़ी मुसलमान पर (और यहां उन्हीं को खिताब है) अल्लाह तआला के बहुत एहसानात हैं उनमें सबसे बड़ी नेअ़मत और एहसान यह है कि ईमान व इस्लाम नसीब किया यह एहसान उसका है हमारा नहीं, चुनांचि कुर्आन मजीद में आया है (तुम पर एहसान जताते हैं कि वह इस्लाम लाये, कहो बल्कि अल्लाह तआ़ला का तुम पर एहसान है कि तुम को ईमान की हिदायत दी अगर तुम सच्चे हो)। (हुजुरात)

हक़ीकत में यह खुदा ही का दीन है वरना कितने बड़े–बड़े समझदार कितने बड़े बड़े आलिम कैसे–कैसे शरीफ व माकूल (सज्जन) लोग दुनिया में मौजूद हैं और हर जमाने में मौजूद रहे जिनको यह इस्लाम की दौलत नसीब नहीं हुई, और इतनी आसान बात उनकी समझ में नहीं आई, अगर इसी पर गौर किया जाए कि कितने अंबिया के आबा व अजदाद और वालिदैन और कितने अंबिया की औलाद, इब्राहीम अ0 के वालिद आज़र, और नूह अ0 का बेटा इससे महरूम रहे तो इस ज़र्रा नवाज़ी पर शादिये मर्ग (ख़ुशी से मर जाना) हो जाए और शुक्र से सर कभी ज़मीन से न उठे यह एहसान सिर्फ़ अरब देहातियों पर नहीं है बल्कि सारे अरब पर है, तमाम सहाबा पर और हर सच्चे मुसलमान पर कियामत तक है। फिर

इस्लाम व ईमान सिर्फ एक एहसान नहीं बल्कि एहसान का मजमूआ है यानी सच्चा इस्लाम अता किया, जानवर के बजाए इन्सान बनाया, अपनी पहचान और वहदानियत अता फरमाई, दुनिया की हर गिरी पड़ी चीज़ की पूजा, परस्तिश से बचाया, ज़िन्दगी का मकसद बताया अंजाम की फ़िक्र दी, मुर्शिदे कामिल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दामन पकड़ाया, जहन्नम के अ़जाब और आखिरत की हसरत से बचाया, दुनिया और आख़िरत की नेअ़मतों का मुस्तहिक़ बनाया, चुनांचि फरमाता है "और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर कि तुम आपस में दुश्मन थे तुम्हारे दिल बाहम मिला दिये तो तुम इस एहसान से भाई भाई हो गये और तुम आग के गडढे पर थे तो तुम्हें उससे नजात दी इसी तरह अल्लाह बयान करता है तुम्हारे लिए निशनियां ताकि तुम हिदायत हासिल करो"।

(आले इमराम 103)।

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार के भरे मजमें में फ़रमाया कि तुम गुमराह थे अल्लाह ने (मेरी वजह से) तुम्हें हिदायत दी तुम फक़ीर थे अल्लाह ने ग़नी किया, तुम बाहम दुश्मन थे अल्लाह ने तुम्हारे दिल मिला दिये"। उन्होंने कहा "बेशक अल्लाह और रसूल का एहसान और सदक़ा है"।

नीज़ फ़रमाया "और तुम्हारे लिए पसन्द कर चुका इस्लाम को बतौर दीन, तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए भी और तुम्हारी मौत के लिए भी" ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और ना मरो मगर इस हालत में कि तुम मुसलमान हो" (आले इमरान 102) और यह वही वसीयत है जो इब्राहीम व याकूब अ0 ने अपनी औलाद को की थी। "ऐ मेरे बेटो बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए खास दीन इन्तिख़ाब कर चुका है तुम न मरना मगर मुसलमान (यानी इस्लाम की हालत में)।

(अलबकरहः 132)।

याद रखो मुसलमान मरने के लिए, मुसलमान जिन्दा रहने की ज़रूरत है इसलिए कि जब मौत का कोई वक्त मुक़र्रर नहीं तो हर वक्त मुसलमान रहना चाहिए ताकि जब भी मौत आ जाए तो इस्लाम की हालत में मौत आए और अकसर यही होता है कि जो जिस हालत में ज़िन्दा रहता है उसी हालत में मरता भी है, इसलिए कि मौत ज़िन्दगी ही में आती है और मुसलमान जिन्दा रहने के लिए इस्लामी अक़ाइद, इस्लामी रुसूम, इस्लामी मआशरत, इस्लामी सुहबत की ज़रूरत है लेकिन क्या मौजूदा हालात से यह मालूम होता है कि अल्लाह जो हमारे लिए पसन्द कर चुका है वह हम भी अपने लिए पसन्द करते हैं? याद रखो जो इस्लाम के सिवा कोई दीन इख़्तियार करेगा वह मक़्बूल न होगा और वह आख़िरत में ख़सारे में होगा। (आले इमरानः85)

तामीरे हयात 25 नवम्बर 2011 ई0 से ग्रहीत)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः नजासत (गन्दगी) किसे कहते हैं?

उत्तरः शरीअ़त ने जिसे नजिस बताया है वह नजिस है, वह नजासत है, इन्सान की अच्छी तबीअ़त भी उसको पसन्द नहीं करती, नमाज़ जैसी इबादत में उससे पाकी ज़रूरी है।

प्रश्नः नजासत कितने प्रकार की होती है?

उत्तरः शरीअ़त में नजासत की दो किस्में हैं। नजासते हुक्मी और नजासते ह़कीकी।

प्रश्नः नजासते हुक्मी का क्या मतलब है?

उत्तरः नजासते हुक्मी वह है जो जाहिर में न मालूम हो मगर शरीअ़त के हुक्म से साबित हो जैसे बे वुजू होना या गुस्ल की हाजत होना।

प्रश्नः वुजू क्या है और यह कब और कैसे किया जाता है?

उत्तरः नमाज़ पढ़ने या काबे का तवाफ करने या कुर्आन मजीद छूने के लिए वुजू ज़रूरी है। इसका तरीका यह है कि जो मुसलमान नमाज़ पढ़ना चाहे या काबे का तवाफ करना चाहे या कुर्आने मजीद छूना चाहे और उसको गुस्ल की हाजत न हो वह पाकी हासिल करने की नीयत से बिस्मिल्लाह करके पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोये फिर कुल्ली करके मिस्वाक करे फिर ठीक से कुल्ली करके तीन बार नाक में पानी पहुंचा कर बायें हाथ से नाक साफ करे, फिर तीन बार पूरा चेहरा (एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक और पेशानी के बालों से ठोढ़ी के नीचे तक तीन बार धोये, फिर दोनों हाथ को हथेलियों समेत तीन तीन बार धोये पहले दाहिना हाथ धोना चाहिए, फिर पूरे सर का मसह करे फिर दोनों पैर टखनों समेत तीन तीन बार धोये पहले दाहिना पैर फिर बायां पैर, वुजू हो गया इसमें चार बातें फर्ज हैं उनमें अगर कोई काम छूट गया तो वुजू नहीं होगा।

1. दोनों हाथ कोहनियों समेत ऐसे धोऐ कि कहीं ज़रा भी जगह न छूटे।
2. पूरा चेहरा धोना।
3. कम से कम चौथाई सर का मसह करना।
4. दोनों पैर टखनों समेत धोना।

इनके अलावा वुजू में किसी अमल में कमी रह गई तो सवाब कम हो जाएगा मगर वुजू हो जाएगा। जिन बातों से वुजू टूट जाता है वह यह हैं—

1. पाखाना पेशाब करना या पाखाना पेशाब की राह से किसी चीज़ का निकल जाना।
2. पीछे की राह से हवा का निकल जाना।
3. जिस्म से खून या पीप का निकल कर बह जाना।
4. लेट कर या सहारा लगा कर सो जाना।
5. बे होश हो जाना।
6. दीवाना (पागल) हो जाना।
7. मुँह भर कर कै हो जाना।

इन बातों से वुजू टूट जाता है और नमाज़ पढ़ने या तवाफ

करने या कुर्आन छूने के लिए फिर से वुज़ू करना पड़ता है।

प्रश्नः आपने लिखा कि गुस्ल की हाजत न हो तो वुज़ू करे तो क्या गुस्ल की हाजत हो तो वुज़ू बे फाएदा होता है? और गुस्ल कब फर्ज होता है और गुस्ल का तरीक़ा क्या है?

उत्तरः हाँ अगर गुस्ल की हाजत हो तो गुस्ल किये बिना वुज़ू करके न नमाज़ पढ़ सकते हैं न काबे का तवाफ कर सकते हैं न कुर्आन छू सक़ते हैं और गुस्ल की हाजत हो तो गुस्ल किये बिना मस्जिद में दाखिल होना भी मना है। गुस्ल फर्ज़ होने की सारी बातें यहां लिखना मुनासिब नहीं, जिस की ज़रूरत हो लिख कर अलग से पूछे या किताबें देखें यहां इतना बताना है कि बिना बीवी के मिलाप से या ख़्वाब (स्वप्न दोष) हो जाने से गुस्ल फर्ज हो जाता है।

गुस्ल का तरीक़ा यह है कि पहले गट्टों तक हाथ धोये, फिर बदन पर जहाँ नजासत लगी हो धो डाले जो कपड़ा गुस्ल के वक्त बदन पर हो उसकी नजासत धो डाले तब फिर वुज़ू करे, नाक में पानी सुड़क कर बांसे तक पानी पहुंचाए, ग़रारे के साथ कुल्ली करे फिर पाकी हासिल करने की नियत से तीन बर पूरे बदन पर पानी बहाए, हर बार बदन मल कर मैल साफ करे बस गुस्ल हो गया। गुस्ल में तीन बातें फर्ज हैं ग़रारे के साथ कुल्ली करना, नाक में बासे तक पानी पहुंचाना और पूरे बदन पर एक बार पानी बहाना, लेकिन रोजे की हालत में गुस्ल करें तो ग़रारा करना और नाक में अन्दर तक पानी पहुंचाना मना है कि इससे रोज़ा टूट सकता है, रोजे की हालत में कुल्ली करके हलके से नाक में पानी पहुंचा कर पूरे बदन पर पानी बहा लें।

प्रश्नः क्या गुस्ल के बाद नमाज़ पढ़ने के लिए फिर से वुज़ू ज़रूरी है?

उत्तरः गुस्ल के बाद अगर वुज़ू तोड़ने वाली कोई बात नहीं हुई है तो अब बा वुज़ू हैं नमाज़ पढ़ने, काबे का तवाफ करने या कुर्आने शरीफ छूने के लिए नये वुज़ू की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नः अगर गुस्ल या वुज़ू की ज़रूरत हो मगर पानी का इस्तेमाल नुक़सान करे या पानी न मिले तो नमाज़ कैसे पढ़ें?

उत्तरः अगर पानी नुकसान करे या पानी न मिले तो नमाज़ पढ़ने या कुर्आन छूने या काबे का तवाफ करने के लिए तयम्मुम करेंगे, मगर याद रहे कि काबे के तवाफ के लिए पानी बराबर मुहय्या रहता है।

प्रश्नः तयम्मुम किसे कहते हैं और उसका क्या तरीक़ा है?

उत्तरः तयम्मुम मिट्टी से नज़ासते हुक्मी दूर करने और उससे पाकी हासिल करने को कहते हैं उस का तरीक़ा यह है कि चाहे गुसल की हाजत हो या वुज़ू की, पाकी हासिल करने की नीयत से बिस्मिल्लाह पढ़ कर दोनों हथेलियां पाक मिट्टी पर मार कर पूरे चेहरे पर अच्छी तरह मले, फिर दोबारा पाक मिट्टी

पर हाथ मार कर बायें हाथ से दाहिना हाथ कुहनियों समेत मलें और दायें हाथ से बायां हाथ कुहनियों समेत मले बस तयम्मुम हो गया चाहे गुस्ल की हाजत रही हो या वुजू की बस आप नमाज़ पढ़ सकते हैं।

प्रश्नः तयम्मुम किन किन चीज़ों पर हाथ मार कर किया जा सकता है?

उत्तरः तयम्मुम पाक मिट्टी कच्ची या पक्की ईंट वगैरह, कंकर, पत्थर, चूना यह सब मिट्टी के हुक्म में हैं, सीमेंट भी मिट्टी है, मिट्टी के कच्चे पक्के बरतन भी मिट्टी के हुक्म में हैं। इन सब पर तयम्मुम जाइज़ है।

प्रश्नः तयम्मुम किन बातों से टूट जाता है?

उत्तरः जिन बातों से वुजू टूटता है उन बातों से तयम्मुम भी टूट जाता है साथ ही जिस उज्र से तयम्मुम किया था वह उज्र खत्म हो जाने पर भी तयम्मुम खत्म हो जाएगा जैसे पानी नुक्सान करता था अब पानी नुक्सान नहीं करता या पानी नहीं मिल रहा था अब पानी मिल गया तो अब तयम्मुम न रहा, गुस्ल की हाजत थी तो गुस्ल करे वुजू की हाजत थी तो वुजू करे।

प्रश्नः नजासते हकीकी किसे कहते हैं?

उत्तरः नजासते हकीकी जाहिरी नजासत को कहते हैं इसकी दो किस्में हैं, नजासते ग़लीज़ा और नजासते ख़फीफा। नजासते ग़लीज़ा ऐसी नजासत को कहते हैं जो ज़्यादा सख़्त मानी गई हैं जैसे आदमी का पाखाना पेशाब, तमाम जानवरों का पाखाना, हराम जानवरों का पेशाब, मुर्गी और बतख़ की बीट, खून, पीप, शराब (सुअर नज्सुल ऐन है उसकी कोई चीज़ पाक नहीं) तमाम मुरदार जानवर भी नजिस हैं, कुत्ते का लुआब भी नजिस है। नजासते ग़लीज़ा का तफसीली बयान फिक्ह की किताबों में देखें या लिख कर पूछें यहां मुख़्तसर लिखा है।

नजासते खफीफा में परिन्दों की बीट और हलाल जानवरों का पेशाब है।

नमाज़ पढ़ने के लिए जहाँ नमाज़ी का जिस्म नजासते हुक्मी से पाक होना ज़रूरी है यानी उसको गुस्ल की ज़रूरत न हो और वह वुजू से हो वहीं उस का जिस्म, उसके कपड़े और नमाज़ पढ़ने की जगह नजासते ग़लीजा व नजासते खफीफा से पाक हो, अलबत्ता अगर नजासते गलीजा ज़्यादा लगी हो, यानी अगर गाढ़ी हो जैसे पाखाना तो साढ़े तीन ग्राम तक और पतली हो जैसे पेशाब तो रूपये के सिक्के की गोलाई के बराबर तक हो तो नमाज़ हो जाएगी लेकिन चाहिए कि नजासत बिल्कुल न लगी हो, इसी तरह नजासते खफीफा चौथाई अज्व तक मुआफ है जैसे कुरते के दामन में एक चौथाई हिस्से में या आस्तीन के एक चौथाई हिस्से में नजासते खफीफा लगी हो तो नमाज़ हो जाएगी लेकिन यह मुआफी मज़बूरी दर्जे ही में लेना चाहिए कोशिश यही चाहिए कि नजासत बिल्कुल न लगी हो।

प्रश्नः क्या औरत के लिए

बेहतर है कि वह हज या उमरे का एहराम सफेद कपड़ों में बाँधे?

उत्तरः मर्दों के लिए अ़फ़ज़ल यही है कि उनकी एहराम की दोनों चादर सफेद हों और इस पर सद फीसद अमल है लाखों हाजियों में कोई एक भी रंगीन कपड़े की चादरें पहने नज़र नहीं आता। लेकिन औरतों के लिए एहराम में सफेद कपड़े की कोई फ़जीलत शरीअ़त में नहीं बताई गई वह अपने आ़म सातिर (शरई पर्दे वाले) लिबास में एहराम की नियत करेंगी चाहे वह सफेद कपड़े इस्तेमाल करती हों चाहे रंगीन।

प्रश्नः अगर किसी औरत के शौहर की वफ़ात हो जाए तो क्या यह ज़रूरी है कि उसके हाथों की चूड़ियाँ फौरन तोड़ दी जाएं या उतार दी जाएं और उसके खूब सूरत रंगीन कपड़े फौरन बदल दिये जाएं?

उत्तरः जिस औरत का शौहर वफात पा जाए उस के लिए ज़रूरी है कि वह चार महीने दस दिन सोग में रहे और जीनत की चीज़ें न अपनाए। खूबसूरत रंगीन कपड़े ज़ीनत के लिए होते हैं इसी तरह चूड़ियाँ भी ज़ीनत के लिए होती हैं पस जिस औरत का शौहर वफात पा जाए वह चार महीने दस दिन तक न चूड़ियाँ पहने न खूबसूरत रंगीन कपड़े पहने, रही बात वफात पाने के फौरन बाद इन चीज़ों का बदलना यह कोई ज़रूरी नहीं उस वक्त औरत पर गम छाया होता है वह रोने धोने में लगी होती है घर वालों को चाहिए उस औरत की हालत देखते हुए मौका मिलते ही चूड़ियाँ उतार दें न उतार सकें तो तोड़ दें और खूबसूरत रंगीन कपड़े बदल कर सादे कपड़े पहना दें इस काम में अगर कुछ देर लगे तो कोई हरज़ नहीं। सादे कपड़ों में सफेद भी हो सकते हैं और रंगीन भी मगर शोख़, भड़कीला, या जाज़िब नजर (आकर्षक) रंग न हो।

प्रश्नः क्या कुर्आने मजीद नाजिल हो जाने के बाद पिछली आसमानी किताबें मन्सूख हो गईं? दलील के साथ लिखिए।

उत्तरः हाँ कुर्आन मजीद के आ जाने के बाद पिछली आसमानी किताबों के अहकाम मनसूख हो गए, कुर्आन मजीद में आया है अनुवदः "बड़ी आलीशान जात है जिसने यह फैसले की किताब (कुर्आन मजीद) अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल फरमाई वह तमाम दुनिया वालों को डराने वाला है"। (अल फुर्कानः 1) दूसरी जगह फरमाया "आप कह दीजिए कि ऐ लोगो मैं तुम सब दुनिया वालों कि तरफ उस अल्लाह की जानिब से रसूल बना कर भेजा गया हूँ जिसकी बादशाहत सारे आसमानों और ज़मीन में है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वही जिलाता और मारता है पस ईमान लावो अल्लाह पर और उसके रसूल पर (आराफः 158) इन आयतों से मालूम हुआ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे आलम के लिए रसूल हैं और उन पर ईमान लाना ज़रूरी है। एक दूसरी जगह फरमाया मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम तमाम नबियों के खातिम हैं। (अहजाबः 40) और आपकी सहीह़ हदीस मिशकात कदीम सफा 30 पर इस तरह है अनुवादः "हज़रत जाबिर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि एक दिन हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 नबिये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और बोले कि हम यहूदियों से उनकी मजहबी बातें सुनते हैं जो हमें भली लगती हैं तो क्या आप इजाजत देते हैं कि उनमें से उन कुछ बातों को लिख लें जो हमें भली लगती हैं और जिनको हम अपनी शरीअत के खिलाफ नहीं पाते? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सुन कर ना गवारी के साथ फरमाया "क्या तुम लोग हैरत में गिरफ्तार हो जाने वाले हो, जैसे यहूद व नसारा अपने दीनी एतिकादात और मजहबी अहकाम में हैरत व परेशानी का शिकार हो गए। कान खोल कर सुन लो मैं जो शरीअत तुम्हारे दर्मियान लाया हूँ वह बिला शुब्हा रौशन और साफ है अगर आज मूसा अ0 ज़िन्दा होते तो उनको भी मेरी पैरवी के सिवा कोई चारा न होता। (अनुवाद मजाहिरे हक जदीद जि0। पा0 227 से ग्रहीत)।

इस हदीस से मालूम हुआ कि अब पिछली किताबें तौरात, ज़बूर, इंजील, वगैरह से रुजू करना ठीक नहीं है इस लिए कि यह सब मनसूख हो चुकी हैं।

प्रश्नः एक मदरसे के ज़िम्मेदार ने कुर्बानी की खालें मदरसे के लिए वसूल कीं, और उन्हें बेच कर रक़म मदरसे के कमरे की छत बनवाने पर खर्च कर दी वह कहते हैं कि मुझे मालूम न था इस लिए ऐसा किया अब उनके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्बानी की खाल बिकने के बाद ज़कात के मुस्तहिक़ मुसलमानों का हक़ है वह जितने में खालें बेची हैं पूरी रक़म अपने पास से ज़कात के मुस्तहिक़ मुसलमानों पर खर्च करें।

❖❖❖

मिशाली अख़्लाक़ .....

–किराम से पूछा कि कौन सी नेकी खुदा को ज़्यादा प्यारी है, किसी ने नमाज़ कहा किसी ने जिहाद बताया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "तमाम नेकियों में सबसे ज़्यादा खुदा को यह नेकी पसंद है कि खुदा ही के लिए महब्बत और खुदा ही के लिए मुखालफत हो। (मुस्नदे अहमद)

इसलिए नफ़्स व इच्छा की पैरवी से भी रोका गया है जगह–जगह कुर्आन व हदीस में मनाही आई है, कुर्आन मजीद में है "और ख़्वाहिशे नफ़्सानी की पैरवी न करो कि वह तुझे अल्लाह की राह से हटा देगी"।

(सूर–ए–स्वादः26)।

दूसरी जगह इरशाद होता है "क्या तूने उस को देखा जिसने अपनी नफ्सानी ख़्वाहिश को अपना खुदा बना रखा है। (अल–जाशियाः23)

अल्लाह हम सब को बा अख़्लाक़ बनाये आमीन!

जारी.....

हिमाक़त (मूर्खता)

—इदारा

मैं प्राइमरी पास कर के मिडिल स्कूल आ चुका था और मिडिल में पाँचवां पास करके छठे में आ चुका था। यह सब 1946 ई0 की बात है उस वक्त सातवाँ पास मिडिल पास कहलाता था। उस वक्त मिडिल स्कूल में उर्दू वालों को फारसी और हिन्दी वालों को संस्कृत पढ़ाई जाती थी मैं पाँचवें की फारसी पढ़ चुका था। मैं पढ़ने में तेज़ था और अब तक हर दर्जे में फर्स्ट डिवीज़न पास होता रहा था साथ ही हर दर्जे में मानीटर भी बनाया जाता रहा। मेरे एक रिश्ते के मामूँ (मेरी वालिदा के खाला जाद भाई) शाकिर अली ममानी के साथ कलकत्ते में रहते थे मुझे नहीं मालूम वह वहां क्या करते थे लेकिन जब वह आते तो बहुत साफ सुथरे रहते बड़े अच्छे कपड़े पहनते, मेरी वालिदा, मेरे वालिद और गांव के लोग उनकी बड़ी इज्ज़त करते उनकी दावतें करते मैं देखता कि उनकी जेब नोटों से भरी रहती, इसी तरह और भी शहरों से आने वालों की इज्ज़त व शान देख कर मेरे दिल में यह बात पैदा हुई कि मैं भी शहर में जा कर काम करूँगा और इसी तरह शान से रहूंगा। मैं देखता था कि वह शहर में काम करने वाले या तो अन पढ़ थे या बस दस्तखत कर लेते, मैंने सोचा कि मुझे तो उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी भी आती है, हिसाब में भी मैं अपने उस्तादों से लोहा मनवा चुका हूँ हिलाज़ा मैं भी शहरं में रह कर शानदार ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूँ।

मैं अपनी उम्र के तेरहवें साल में था, जूलाई का महीना था, छटे में दाखिला हो चुका था कोर्स की किताबें खरीद चुका था। शाकिर मामूँ कलकत्ते से आए हुए थे, अब उनके जाने की तारीख़ मुकर्रर हो चुकी थी, जो मुझे मालूम थी मामूं मीरमऊ गाँव में रहते थे। मैंने तय किया कि मैं कलकत्ते जाऊंगा मगर कैसे जाऊंगा वालिद साहब इजाजत देंगे की नहीं, मांमू साहब साथ लेंगे की नहीं। मैंने प्लान बना लिया मामूं साहब को देहरादून हावड़ा इक्सप्रेस से कलकत्ता जाना था और रूदौली स्टेशन पर सवार होना था, मैं रूदौली मिडिल स्कूल में पढ़ता था, मामूं के सफ़र की तारीख को घर से पढ़ने के लिए रुदौली आया, और किताब की दुकान पर जा कर अपनी किताबें आधे दाम पर बेच दीं और रुदौली स्टेशन जा पहुंचा वहां मामूं मौजूद थे उनके भेजने के लिए बड़े मामू और दूसरे लोग आये थे। मामूं ने पूछा स्कूल क्यों नहीं गये? मैंने कहा चला जाऊंगा, आप को भेजने आया हूँ। 11 बजे गाड़ी आई जो रुदौली में सिर्फ एक या दो मिनट रुकती थी, मामूं जलदी से सवार हुए, गार्ड ने हरी झन्डी दिखाई और सीटी बजाई गाड़ी चल दी मैं दौड़ा,

लोग हाँ–हाँ करते रहे मगर मैं गाड़ी पर चढ़ने में कामयाब हो गया।

अब मामूं साहब ने समझाना शुरु किया बेटे यह पैसे लो और फैजाबाद से वापस हो जाओ अपनी पढ़ाई करो। मेरा जवाब था मुझे तो कलकत्ते जाना है अगर आप उतार देंगे तो मैं कहीं और चला जाऊँगा। मामूं साहब साथ ले जाने पर मजबूर हो गये। रुदौली स्टेशन से ग्यारह बजे गाड़ी छूटी थी दूसरे दिन सुब्ह को हावड़ा स्टेशन पहुंची, उतरे तो मेरे पास टिकट न था पकड़ा गया मुझे नहीं मालूम किस तरह मामूं ने छुडा कर अपने साथ ले गये और अपने कमरे में साथ रखा वह मटिया बुर्ज में रहते थे वहां ममानी ने मेरी बड़ी ख़ातिर की, दो रोज़ बाद मुझे बहुत सख़्त बुखार आया लोगों ने कहा घबराने की बात नहीं है यह पानी बदला है हर नये आने वाले को शुरु में तेज़ बुख़ार आता है। ऐसा ही हुआ दो रोज़ बाद मैं ठीक हो गया। अब मुझे मालूम हुआ कि मामू कोई नौकरी नहीं करते खाने के होटलों में कोयला सप्लाई करते हैं। उस वक्त होटलों में पत्थर के कोयले से खाना तैयार किया जाता था।

चूंकि मैं हिसाब में बहुत तेज़ था इसलिए मुतवक्के था कि कहीं मुनीमी की जगह मिल जाएगी यह न समझ पाया कि 13 साल के लड़के को मुनीमी की जगह नहीं मिल सकती। चंद रोज़ बाद मुझे मामूं ने एक होटल में प्लेटें धोने पर रख दिया, होटल में 12 घण्टे की ड्यूटी थी मेरे हवास उड़ गये एक हफ्ते में बरतन धोते धोते मेरी उंगलियां सड़ गईं, ममानी को मालूम हुआ तो उन्होंने काम छुडवा दिया, अब मुझे अपनी हिमाक़त का एहसास हुआ।

जब मेरे हाथ ठीक हुए तो मामूं ने मुझे एक चाय के होटल में सिर्फ चाय लगाने पर रख दिया अभी हफ्ता भी न गुज़रा था कि कलकत्ते में फसाद हो गया, मैं काम छोड़ कर मामूं की कयाम गाह पर आ गया, फसाद से पूरा कलकत्ता मुतअस्सिर था, कुछ दिनों के लिए तो रेल की आमद व रफ़्त भी बन्द रही डाक का निज़ाम पूरे शहर में ठप था, मुझे अपनी हिमाक़त पर रोना आता, रात में चाँद को देखता तो सोचता कि यह चाँद मेरे आंगन से भी दिख रहा होगा मगर अब शायद मुझे अपने आंगन से यह चांद न दिख सकेगा। माँ की याद आते ही बे चैन हो जाता।

दो हफ़्तों के बाद जब फसाद रुका और मालूम हुआ कि गाडियाँ चलने लगी हैं तो मैंने मामूं से कहा कि मैं घर जाऊँगा। मामूं ने कहा फसाद के सबब मेरा काम ठप रहा मेरे पास पैसे भी नहीं हैं कि तुम को टिकट दिलाऊँ, फिर रास्ता भी खतरे से खाली नहीं है। मैंने कहा मैं हर हाल में घर जाऊँगा और बिला टिकट जाऊँगा। मामूं ने कहा ऐसे में मैं तुम्हें गाड़ी पर बिठाने नहीं जा सकता। मैंने कहा कोई बात नहीं है मैं तो घर जाऊँगा। ममानी ने रोटियां पका कर साथ कर दी और मैं किसी तरह हावड़ा स्टेशन पहुंचा और मालूम करके हावड़ा से

देहरादून जाने वाली गाड़ी पर जैसे तैसे सवार हो गया, मैं बिला टिकट था, मगर कलकत्ते से भगदड़ का ज़माना था रास्ते में चेक न हुआ। रास्ते में गाड़ी पर एक बड़े मियां लोगों को करीमा के अशआ़र सुना कर उसका मतलब बयान कर रहे थे। करीमा मुझे ज़बानी याद थी मैंने देखा कि बड़े मियां बाज़ अश्आ़र ग़लत पढ़ रहे हैं मैंने उनको टोका तो वह गुस्सा होने के बजाए बहुत ख़ुश हुए और दूसरे लोग भी मेरी तरफ मुतवज्जेह हुए और मुझ से अशआ़र पढ़ कर मतलब बयान करने का मुतालबा किया मैं देर तक अश्आ़र सुनाता और मतलब बयान करता रहा लोग मुझ से बहुत खुश हुए उनमें अकसर तादाद हिन्दू भाइयों की थी।

जब शाहगंज स्टेशन से गाड़ी रवाना हुई तो मैंने देखा कि मेरे डिब्बे में टीटी दाखिल हो रहा है गाड़ी थोड़ा चली थी कि किसी वजह से रुक गई, टीटी ने मुझे देखते ही भांप लिया, पूछा टिकट? मैं ख़ामोश रहा उसने मुझे गाड़ी से उतार दिया और गाड़ी चल दी मुझे देख कर स्टेशन से दो तीन लोग दौड़े, और मुझे पकड़ कर स्टेशन ले गये, समझ में न आ रहा था कि क्या करूँ, फौरन ज़ेहन ने काम किया और मैं फूट फूट कर रोने लगा और कलकत्ते में बीती झूठी दास्तान गढ़ कर सुनाने लगा और अपनी मुसीबत बयान करने लगा, स्टेशन मास्टर को तरस आया उसने मुझे खाना खिलाया और रुदौली से गुज़रने वाली अगली ट्रेन पर मुझे बैठा दिया। इस तरह बे टिकट रुदौली स्टेशन उतरा, और टिकट लेने वालों से आँख बचा कर निकल आया वहां से पैदल चल कर अपने घर पहुंचा घर वालों ने लिपटा लिया, नहाया कपड़े बदले और खा पी कर फारिग़ हुआ तो लोगों को कलकत्ते के हालात सुनाए।

पूरे चालीस दिनों के बाद मेरी वापसी हुई थी मेरी अदम मौजूदगी में मेरी वालिदा का जो हाल हुआ था उसे सुन कर खुद बहुत रोया। लोगों ने बताया कि तुम्हारी वालिदा का खाना पीना छुटा हुआ था। हर वक्त रोने से काम था। वालिद साहब लोगों से कहते कि मेरी आधी जायदाद कोई ले ले और मेरा बेटा ला दे। मुझे अपनी हिमाकत पर रोना आ रहा था।

सुब्ह को वालिद साहब ने मुझे स्कूल भेजा वहां हेड मास्टर हबीब हुसैन साहब ने चालीस दिन की गैर हाज़िरी के बावजूद नाम न खारिज किया था, फिर पढ़ाई शुरु हुई और सालाना इम्तिहान में स्कूल में टाप किया। यह थी मेरी हिमाकत अगर अल्लाह का करम न होता तो अब तक किसी होटल में प्यालियाँ धोता रहता, मगर अल्लाह का लिखा कौन टाल सकता था, अल्लाह के करम से मिडिल किया, नदवे आया, यहाँ मुलाज़मत के साथ हाई स्कूल इन्टर, बी0ए0, एम0ए0, डाक्ट्रेट तक तालीम हुई, खुद से हिफ़्ज़ किया। रियाज जा कर वहां से भी एम0ए0 किया अल्लाह के करम से कई हज किये और अब अस्सी साल

शेष पृष्ठ..... 36 पर

कुर्आन पाक की महानता

—तहरीम मुशीर माही

संसार की सबसे महान पुस्तक कुर्आन शरीफ है। संसार के बड़े वर्ग ने इसकी महानता को स्वीकारा है और रहती दुनिया तक इसकी महानता से इनकार नहीं किया जा सकता। कुर्आन क्योंकि अल्लाह का कलाम है और स्वयं अल्लाह ने इसकी सुरक्षा का एलान किया है। कुर्आन संसार में मानवता का संदेश लेकर आया और उसने जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला। कुर्आन की महानता का इस बात से अनुमान लगाना चाहिए कि जब कुर्आन उतरा तो संसार की सभी दूसरी पवित्र आकाशीय पुस्तकें मनसूख़ (निरस्त) कर दी गईं और केवल इस पर ही चलने का आदेश दिया गया।

कुर्आन ही एक मात्र ऐसा पवित्र ग्रन्थ है जिसमें जीवन के हर मोड़ पर मनुष्य की मानसिक और सभी सामाजिक क्षमताओं को प्रदर्शित किया गया है जिसके द्वारा मनुष्य उसे अपने जीवन का पथ प्रदर्शक चुन कर सच्चाई का रास्ता अपना सके। कुर्आन में स्वयं इस बात की तरफ इशारा किया गया है कि "हमने मानव जाति के लिए कुर्आन में हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि वह उपदेश (नसीहत) हासिल कर सके।"

(सूरह जुमर—27)

कुर्आन पाक का सबसे बड़ा कारनामा इसका लोगों के लिए हिदायत लेकर आना था जो लोग राह से भटक गये थे उन्हें राह दिखाना था और प्रलय आने तक लोगों के लिए इसमें उनके पथ और उन्नति का वर्णन भी कर दिया गया ताकि लोग इसे पढ़ कर समझें जानें और इसी के अनुसार अपने जीवन के सही पथ का अनुसरण करें क्योंकि इसमें ईश्वर की ओर जाने वाले पथ का वर्णन किया गया है कुर्आन स्वयं ये वर्णन करता है "यह (अल्लाह की) किताब है इसमें कोई शक नहीं"। (सूरः बकरहः 2)

संसार के मालिक ने हर युग में मनुष्यों के लिए भाई चारे, धर्म पर जीवन व्यतीत करने के लिए समय—समय पर अपने पैगम्बर को भेजता रहा और उनके द्वारा जो सहीफा (ईश्वरीय ग्रन्थ) होता वह उसकी शिक्षाओं से मनुष्यों को ईश्वर की ओर बुलाता। कुर्आन भी ईश्वरीय सन्देश है और यह भी पैगम्बर पर उतारा गया है। यह संसार के सभी व्यक्तियों के लिए ईश्वर का अन्तिम सन्देश है और अब ईश्वर की ओर से कोई सन्देश नहीं आयेगा इसलिए कुर्आन ने यह भी वर्णन कर दिया है कि यह अल्लाह की पुस्तक है और नबी सल्ल0 ने इसे अपनी तरफ से नहीं गढ़ा है अतः ईश्वर ने स्वयं ही इसकी दलील दी है— "क्या यह लोग कहते हैं कि इसने (मुहम्मद सल्ल0)

इसे अपनी तरफ से गढ़ लिया है। कह दो अगर सच्चे हो तो तुम भी इस तरह की एक सूरह बना लाओ और अल्लाह के सिवा तुम जिनको बुला सको बुला लाओ।" (सूरः यूनुस–38)

कुर्आन आने के बाद स्वयं ईश्वर ने जो किताबें आखिरी नबी सल्ल0 से पहले उतारी थी उन्हें निरस्त कर दिया। उससे पहले ज़बूर हज़रत दाऊद अलै0, तौरेत हज़रत मूसा अलै0, इंजील हज़रत ईसा अलै0 पर उतारी गई थीं परन्तु उनके बजाए अब लोग केवल और केवल कुर्आन को ही अपना पथ प्रदर्शक मानें इसका स्पष्टीकरण स्वयं कुर्आन ने भी किया है– "ऐ नबी जो किताब हमने तुम्हारी तरफ "वही" के ज़रिए भेजी है वह हक़ है और यह अपने से पहली किताबों की तस्दीक करने वाली है।"

(सूरः फातिर–31)

कुर्आन ने संसार में पैदा होने वाले प्राणि के जीवन से लेकर मृत्यु तक सूरज चाँद से लेकर पानी मिट्टी और समुद्र तक और ज़मीन से लेकर आसमां तक अल्लाह और उसके कानून की दलील दी है और आधुनिक अनुसन्धान एवं विज्ञान के अनुसार कुर्आन की शिक्षाऐं सत्य हैं। उदाहरण स्वरूप.....

"और सूरज और चाँद को तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करने में लगा दिया जो एक दस्तूर पर लगातार चलते रहते हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे काम में लगा दिया।" (सूरह इब्राहीम–33)

कुर्आन इन्सानों के लिए मार्ग दर्शक बनकर संसार में आया। कुर्आन जैसी महान पुस्तक के आने से पहले समाज बुराईयों में पूरी तरह से लिप्त हो चुका था। वह सामाजिक स्थिति से और धार्मिक स्थिति से एक कुरूप युग था। हर मनुष्य अपने जीवन पर केवल अपना अधिकार मानता था। माबूद (उपास्य) के नाम पर उसने तरह–तरह के देवता बना रखे थे कुछ ने जान बूझ कर और कुछ ने अज्ञानता के कारण अपने आपको पाप की ओर अग्रसर कर रखा था। समाज में इस तरह की कुरीतियां फैल चुकीं थीं कि लोग केवल भोग विलास का जीवन व्यतीत करते थे और इनमें शराब, जुआ, जिनाकारी और छोटी–छोटी बातों के लिए लड़ाई झगड़े आम बात हो गई थी इस अज्ञानता के कारण यदि किसी को सबसे अधिक नुकसान हुआ तो वह औरत जाति थी जिसका अस्तित्व जिहालत की भेंट चढ़ चुका था। उनका सामाजिक दृष्टिकोण था की औरत का अपना कोई वजूद नहीं है वह तो निचले दर्जे की कोई वस्तु है और उसे संसार में केवल और केवल मर्द के अधीन रहना होगा इनमें यदि कोई जीवित बचती तो उसका यह हाल था। मगर कुर्आन और इस्लाम आने के बाद यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई कि औरत और मर्द दोनों बराबर हैं और उनके अधिकार भी अलग अलग हैं। कुर्आन ने यह शिक्षा दी कि औरत होने के कारण कोई भी व्यक्ति सामाजिक तौर पर स्त्री के अधिकारों का हनन नहीं कर सकता। उसने यह भी शिक्षा दी कि स्त्री या पुरुष जिसके जैसे आमाल

होंगे वह उसी आधार पर अल्लाह के सामने पेश होगा। कुर्आन स्वयं यह वर्णन करता है–

"तुममें से किसी अमल करने वाले के अमल को बर्बाद नहीं करुंगा वह मर्द हो या औरत तुम आपस में एक ही हो।" (सूरह आले इमरान–195)

वैश्विक स्तर पर यह बात स्पष्ट है कि इस्लाम ही एक मात्र वह धर्म है जिसने औरत को उसका वास्तविक अधिकार दिया और समाज में स्वयं उसका क्या अधिकार है यह भी बता दिया और कुर्आन ने स्पष्ट तौर पर यह कह दिया कि अधिकार की स्थिति दोनों की बराबर है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है इस आधार पर कि वह स्त्री और पुरुष हैं। कुर्आन मजीद में जहां मर्दों के हुकूक़ बयान हुए हैं वहीं औरतों के हुकूक़ भी पूरी तरह से बयान हुए हैं।

इस तरह देखा जाए तो कुर्आन ने केवल औरतों को ही अधिकार नहीं दिये बल्कि माँ–बाप, गुलाम, यतीम, शादी, तलाक, ज़मीन, जायदाद, रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात आदि विभिन्न विषयों को सामने रखा और स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह ने छोटे–बड़े को हर तरह के अधिकार दिये ताकि वह संसार में किसी भी वर्गीकरण के आधार पर अपने आपको तुच्छ ना समझें।

कुर्आन की शिक्षा कोई मामुली शिक्षा नहीं है बल्कि उसकी शिक्षा हर शिक्षा से उच्च है। यह हमारा और आपका कर्तव्य है कि हम कुर्आन की शिक्षा को अधिकाधिक फैलायें। यदि हम कुर्आन की शिक्षाओं को ग्रहण कर अपनी ज़िन्दगी में अमल करते हैं तो हमारा जीवन दूसरी क़ौमों के लिए आदर्श स्वरूप होगा और इसके द्वारा सीधे तौर पर उन तक कुर्आन की महानता का सन्देश पहुंचेगा। यह हमारा दायित्व है कि हम कुर्आन की शिक्षाओं को विश्व स्तर पर फैलाएं परन्तु मुस्लिम समाज का एक बहुत बड़ा सच यह है कि उसने कुर्आन से शिक्षा लेना कम कर दिया है। कुर्आन बहुत से मुसलमानों के यहां अलमारी और ताक की शोभा बन कर रह गया है। जब तक मुस्लिम समाज कुर्आन की शिक्षाओं को पूरी तरह से अपनी आत्मा में नहीं उतार लेता तब तक वह संसार में सम्मान नहीं पा सकता और सदैव कष्ट का भागीदार बना रहेगा। इसलिए कुर्आन हमेशा से महान है और महान रहेगा। अब हम को चाहिए कि हम इससे लाभ उठाऐं और इस पर अमल करके संसार पर इस की महानता स्पष्ट करें। अल्लामा इक़बाल ने क्या खूब कहा है–

"लारैब तेरी रूह को तस्कीन मिलेगी
तू कर्ब के लम्हात में कुर्आन पढ़ा कर।"

❖❖❖

हिमाक़त .....

का हो चुका हूँ। दुआ है कि अल्लाह तआला जब तक ज़िन्दा रखे इस्लाम पर रखे और चलते फिरते ईमान के साथ उठाले।

यह अपनी हिमाक़त की कहानी इसलिए लिखी ताकि लोग इससे सबक लें और नौजवान लड़के ऐसी हिमाक़त न करें।

❖❖❖

मोटापा: सुन्दरता व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

—हकीम मो0 इदरीस रहीमी एम.डी.

—जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

खुदा ने अरबों इन्सानों को इस दुनिया में पैदा किया है। लामुतानाही (असीम) समुद्र खूराक उप्लब्ध करने के लिए बना दिये अनगिनत छोटे बड़े दरिया जारी कर दिये किसी मुल्क के निवासी गोरे लम्बे आकार के, और किसी मुल्क के निवासी छोटे आकार के मोटे–मोटे और बड़ी आँखों वाले हैं कुद्रती तौर पर बदन का सिडोल और मोटा होना तो बीमारी नहीं, इस किस्म के इन्सान कामयाब और सिहतमंद जिन्दगी गुज़रते हैं, हकीमों की नज़र में अस्थायी तौर पर बदन का फूल जाना, पेट का लटक जाना और हाथ पाँव और बाहों का गोश्त आटे की समान फूल जाना सिहत व स्वास्थ्य के लिए सख़्त हानिकारक रोग है। मोटापे की बीमारी का ज़िक्र हज़ारों साल पुरानी तिब की किताबों में मिलता है। इन्सानी सभ्यता के प्रारम्भिक दिनों में यहां तक कि चन्द दहाइयों पहले यह बीमारी बहुत कम ही दिखाई देती थी। क्योंकि लोग गिजाईयत (पौष्टिकता) से भरपूर और जल्द हज़्म हो जाने वाली गिजायें बहुत ही सादगी से इस्तिमाल किया करते थे हमारे बुजुर्ग पका हुआ फल और पकी हुई सब्जियाँ खेत से तोड़ कर खाने के आदी थे यह सादा गिजायें एक तो बदन को पालन पोषण करने वाले तमाम चीजों के साथ खाई जाती थी। दूसरे किलो आधा किलो सब्जी और फल से इन्सान का पेट भर जाता था।

नये रहने सहने के तरीकों के कारण हम फलों और सब्जियों के ज़्यादा फायदेमंद और पौष्टिकता से मालामाल हिस्से काट छाँट कर के बेकार कर देते हैं पहले आने जाने के साधन सीमित होते थे। रेलगाड़ियां, बसें और हवाई जहाज़ कम या न होने के बराबर थे एक मुल्क और शहर की बनाई हुई मिठाइयां, टाफियां, बिस्कुट, केक, पेड़े, कबाब, टोस्ट मुर्ग और गोश्त दूसरे मुल्म के शायद ही पहुंचते थे। अब तिजारती कम्पनियां अपनी बनाई हुई खाने पीने की चीजों को आटोमेटिक मशीनों में तैयार करके और खूबसूरत पैकिंग के साथ बाहरी मण्डियों में भेज रही हैं, बाज कम्पनियां उन खाने पीने की चीजों पर Expiry Date भी जनता को खूब संतुष्टि दिलाने की खातिर लिख देती हैं इन कोलिस्ट्राल और मिठास वाली गिज़ाओं की ज़्यादती से हर शहर और क़स्बे में प्राप्त होने के कारण अवाम में उनके प्रयोग की रुचि बहुत ज़्यादा हो गयी है यह गिजायें अस्ली ताकत की जगह बदन में फैलाव और मोटापा पैदा करती हैं।

जनता को रात दिन सुझाव दिया जा रहा है कि आम बीमारियों से बचे रहने के लिए रक्षा शक्ति हमारे बदन में काफी होनी चाहिए। समाज रक्षा शक्ति बढ़ाने के शौक में अलाबला और गैर मेयारी (मानक से गिरी हुई) पेटेण्ट वस्तुऐं खाता रहता है। एक और वजह यह है कि हर माँ और बाप यह चाहता है कि मेरा बच्चा हृष्ट–पुष्ट और मोटा ताज़ा हो, इस मक्सद के लिए

होनी वाली माँ को ज़्यादा बदन बनाने वाली गिज़ाऐं खिलाई जाती हैं, गौर किया जाय तो ज़्यादी भारी और मोटे बच्चे आम तौर पर अच्छी तन्दरुस्ती के मालिक नहीं होते, विकसित मुल्कों मे आठ पौंड से ज़्यादा भारी पैदा होने वाले बच्चे को स्वास्थ्य पूर्वक नहीं समझा जाता इस तरह ज़्यादा भारी और फूले हुए जिस्मों वाले उम्मीदवारों को सरकारी और जिम्मेदार इदारों में नौकरी के काबिल नहीं समझा जाता।

बहर हाल मोटापे का साधारण सबब ज़्यादा खाने पीने का शौक है। यह ज़ाहिर है कि ज़्यादा खाने वाले ज़्यादा तेलमसाले और चटपटी गिजायें ही प्रयोग करते हैं, दूसरा सबब गिज़ा के मुकाबले में कम वर्जिश करना है मोटर साइकिल और कारों के आम प्रयोग से समाज के आधे लोगों का वर्जिश करना तो दूर, बाज़ार से बेगैर सवारी के घरेलू प्रयोग की चीजें भी खरीदने का सवाल ही पैदा नहीं होता खेलकूद में हिस्सा न लेने और मुनासिब वर्जिश न करने और ज़्यादा बैठे रहने से मोटापा दिनो दिन बढ़ने लगता है खाने तो ज़्यादा जोश और गोश्त पैदा करने वाले खाये जाते हैं मगर उसको हज़म करने के लिए मुनासिब वर्जिश नहीं की जाती बाज औरतों को ज़माने खास (जब औरत को माहवारी बंद हो जाती है) शुरु होने के बाद मोटापे का रोग लग जाता है ऐसी औरतों को खड़े खड़े घर के काम करने और सुबह वर्जिश करने की राय दी जाती है।

याद रखें कि चर्बी की ज़्यादती दिल और फेफड़ों पर दबाव डालती है कमज़ोर दिल वालों को तो मामूली मोटापा भी चलने फिरने और घरेलू काम काज में रुकावट डालता है। ज़्यादा भारी मर्द व औरत का बोझ कूल्हे, घुटने, टख़ने के जोड़ों पर पड़ता है और उनके जोड़ कमज़ोर हो जाते हैं, चर्बी की परत की वजह से गर्मियों में बेचैनी, घबराहट और प्यास की ज़्यादती की शिकायत हो जाती है, मरीज समझता है कि मुझे गर्मी हो गयी है हालांकि चर्बी को हल (मिलान) के लिए तबीयत प्यास लगाती है।

एक तहक़ीक़ के मुताबिक कभी मोटापा खानदानी तौर भी मुन्तकिल होता है, इसलिए ऐसे लोग जिन के माँ–बाप बहुत ज़्यादा मोटे हैं उनकी औलाद में मोटापे की सम्भावनायें ज़्यादा देखी जाती हैं। इसके अलावा कुछ बीमारियां मसलन, "थाइराइड" की बीमारियों में भी साफ तौर पर मोटापा देखने में आता है, मोटापे का तअल्लुक़ न सिर्फ यह कि जोड़ों की बीमारियों और शूगर से साबित हो चुका है बल्कि एक नई रिसर्च के मुताबिक ज़्यादा मोटापे और कैंसर का तअल्लुक भी देखने में आ रहा है। सही है कि ज़्यादा मोटापा न सिर्फ यह कि जाहिरी सुनदरता को प्रभावित करता है बल्कि अंदरूनी तौर पर भी अंदरूनी जिस्म बहुत से अप्राकृतिक बीमारियां पैदा करने का राबब हो सकता है।

खेतों में काम करने वालों को कभी मोटापे का रोग नहीं होता। हार्ड वर्करों को भी मोटापे का रोग नहीं होता। जो लोग हमेशा कुछ वर्जिश करते रहते हैं वह भी मोटापे के रोग से बचे रहते हैं।

सबसे अच्छी वर्जिश सुब्ह के वक्त खुली हवा में कम से कम एक किलो मीटर हल्की दौड़ लगाना या टहलना है।

राष्ट्रीय सहारा उर्दू 30.09.13 से ग्रहीत

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पो0 बा0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ 226007 यू0 पी0 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس/۹۳، ٹیگور مارگ،
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ یوپی (بھارت)

दिनांक 10/11/13 باسمہ تعالیٰ تاریخ ۵/محرم الحرام ۱۴۳۵ھ

अहले ख़ैर हजरात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की सरपरस्ती में अपनी इलमी व दीनी खिदमात में मस्रूफ है, और तालिबाने उलूमे नुबुव्वत जूक़ दर जूक़ आ आ कर इस सरचश्मए इल्म से फैजियाब हो रहे हैं, तलबा की कसरत की वजह से दारूलउलूम की मस्जिद तंग हो गई है, बारिश या धूप में तलबा को बहुत तकलीफ होती है, इस सूरते हाल को देख कर अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर मस्जिद की मजीद तौसी का फैसला किया गया है।

मस्जिद दारूलउलूम के वसी सहेन के नीचे बेसमेन्ट और सहन पर छत डाल कर उसके ऊपर एक मंजिल तामीर करने का मंसूबा है, जिस पर 1,25,05,000/– रूपये खर्च का तख्मीना है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हजरात के तआवुन से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम जरूरत की तरफ फौरी तवज्जुह फरमाएंगे और नदवतुलउलमा के कारकुनों का हाथ बटाएंगे और मस्जिदों की तामीर में अल्लाह ने जो अज्र व सवाब रखा है उसके मुस्तहिक बन सकेंगे, रसूले अकरम स0 का इर्शाद गिरामी है कि :–

"जो कोई अल्लाह के लिए मस्जिद तामीर कराएगा, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर तामीर कराएगा।"

मौ0 मुफ्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।
NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।
NAZIM NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: (+91-0522) 2741316, 2740151 / **Fax**: (+91-0522) 2741023, 2741231
E-mail address: nadwa@sancharnet.in / **Website**: www.nadwatululama.org.

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

पाकिस्तान में भी बनेगा आरटी आई जैसा कानून-

पकिस्तान जल्द ही भारत के सूचना अधिकार कानून की तर्ज पर अपने यहां सूचना की आजादी कानून संबंधी विधेयक सीनेट में पेश करेगा। सूचना एवं प्रसारण मामले की सीनेट समिति ने इस विधेयक के मसौदे को मंजूरी दी।

समिति ने आठ महीने के विचार विमर्श के बाद इस मसौदे को स्वीकृति दी। समाचार पत्र डॉन के अनुसार इस विधेयक के रक्षा से संबंधित इकाइयों को दूर रखा गया है। राष्ट्रपति के प्रवक्ता की अध्यक्षता वाली एक उप समिति की ओर से की गई सिफारिशों के आधार पर सूचना प्रसारण मंत्रालय ने विधेयक तैयार किया। यह फैसला किया गया हे कि समिति के प्रमुख इस विधेयक को जल्द ही सीनेट में पेश करेंगे। हालांकि, इस प्रस्तावित कानून के तहत सूचना हासिल करने के प्रावधानों के बारे में अभी सटीक जानकारी नहीं मिली है।

मोरसी को हटाना तख़्ता पलट नहीं: अमेरिका-

अपने हितों के लिए परिभाषाओं को बदलना अमेरिका के लिए कोई नई बात नहीं है। एक बार फिर इसनीति का पालन करते हुए उसने मिस्र में सेना द्वारा मोहम्मद मोरसी को सत्ता से हटाने की कार्यवाई को सैन्य तख़्तापलट मानने से इनकार कर दिया। अमेरिका ने कहा कि मिस्र को दी जाने वाली 1.5 अरब डॉलर की सैन्य सहायता भी जारी रहेगी। अमेरिकी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता जेन पेसाकी ने कहा, हमारे कानून के अनुरूप मिस्र को सहायता मुहैया कराते रहना एक लोकतांत्रिक शासन के लिए ज़िम्मेदार परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह हमारे राष्ट्रीय हितों के अनुरूप भी है।

एशिया में अरब पतियों का इज़ाफ़ा-

सन् 2013 ई0 में, एशिया में 18 अरब पतियों का इज़ाफ़ा हो गया। दुनिया भर में अरब पतियों की तादाद बढ़ती जा रही है एशिया में यह तादाद बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। ख़बर है कि 2012 और 2013 के बीच एशिया में 3.7 से लेकर 13 फ़ीसद तक इज़ाफ़ा हुआ है यह इस बात की दलील है कि यह इलाक़ा तेज़ी से तरक़्क़ी कर रहा है और बहुत मुमकिन है कि यह इलाक़ा अगले पाँच बरसों में उत्तरी अमरीका की बराबरी कर लेगा। सर्वे में अमीर लोगों की पब्लिक और निजी इदारों में हिस्सेदारी रिहाइशी और सरमायाकारी, आर्ट कलेक्शन, ज़ाती तय्यारे (विमान) नक़दी को मद्दे नज़र रखा गया है।

❖❖❖